thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वन्दना

ओ३म्

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक
ऋषिवर दयानन्द सरस्वती

महात्मा विरजानन्द जी अपने शिष्यों से विपुल प्रेमबद्ध भी थे। एक दिन सायं समय उन्हें पता लगा कि उनका एक शिष्य आज इसलिए अध्ययनार्थ नहीं आया कि वह किसी पीड़ा विशेष से अत्यन्त पीड़ित है। उसी समय एक–दूसरे शिष्य को संग लेकर उस शिष्य के गृह पर पहुँचे और आश्वासन देते हुए बड़ी देर तक उसके पास बैठे रहे। स्वामी दयानन्द जी पर तो उनकी अपार प्रीति थी। उन्होंने अपने सारे शिष्यों के समक्ष कई बार यह कहा कि मेरे शिष्यों में योग्य तो एक दयानन्द ही है। यही एक मेरे आशय को पूर्णरीति से समझा है। मुझे इस पर भरोसा है कि यह अपनी विद्या को सफल करेगा।

श्री दयानन्द जी की तर्कशैली पर भी श्री विरजानन्द जी मोहित थे। विद्या विनोद में किसी–किसी दिन गुरू–शिष्य में परस्पर युक्ति–प्रयुक्ति बाण–वर्षा होने लग जाती तो द्रोण–अर्जुन संग्राम का समय बन्ध जाता था। विरजानन्द जी अपने शिष्य के तर्क चातुर्य की प्रशंसा करने लग जाते थे। कभी–कभी तो विरजानन्द जी कह देते थे–"दयानन्द! तुमसे कोई क्या वाद करे ? तुम तो कालजिह्व हो! जैसे काल सब पर बली है, वैसे तुम्हारी तर्क–शक्ति भी प्रबल है। सब कुमतों का खण्डन करने में समर्थ है।"

श्री विरजानन्द जी के निकट दयानन्द जी के अतिरिक्त अन्य भी अनेक शिष्य अध्ययन करते थे। परन्तु उनकी तर्क–शक्ति प्रबल न थी। गुरूजी जैसा पाठ पढ़ाते, शास्त्र की जैसी व्याख्या करते वे सब सुनते चले जाते थे। बीच में कोई प्रश्नोत्तर करने का साहस न करता था। परन्तु जब श्री दयानन्द जी अध्ययन करने आते थे तो मध्य में बार–बार प्रश्नोत्तर छिड़ जाते थे, तर्क की झड़ी लग जाती थी, युक्तियों–प्रयुक्तियों का तार बन्ध जाता था। गुरू जी प्रायः कह दिया करते थे– "दयानन्द! आज तक मैंने बहुतेरे विद्यार्थियों को पढ़ाया परन्तु जो स्वाद, जो आनन्द तुम्हें पढ़ाने में आता है, वह अन्य किसी को भी पढ़ाने में आज तक नहीं आया।"

–श्रीमद् दयानन्द प्रकाश

।। शुभ कामना ।।

सबकी नसों में पूर्वजों का पुण्य रक्त प्रवाह हो,
गुण, शील, साहस, बल तथा सब में भरा उत्साह हो।
सबके हृदय में सर्वदा समवेदना का दाह हो,
हमको तुम्हारी चाह हो, तुमको हमारी चाह हो।

–गुप्त जी

यह अंक आर्य वन्दना कोष के सौजन्य प्रकाशित किया गया तथा
आगामी अंक आर्य समाज मण्डी के सहयोग से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ८८वां विक्रमी सम्वत् २०७१ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११५ दिसम्बर २०१४

thearyasamaj.org

आर्य समाज, मण्डी का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मण्डी हिमाचल प्रदेश का ८५वां गौरवशाली वार्षिक उत्सव दिनांक ३० अक्तूबर, २०१४ से २ नवम्बर, २०१४ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। चार दिवसीय उत्सव का शुभारम्भ ३० अक्तूबर, २०१४ को प्रातः गायत्री महायज्ञ से हुआ। उसी दिन दोपहर को एक भव्य शोभा यात्रा निकाली जिसमें स्थानीय जनता के अतिरिक्त डी. ए. वी. विद्यालयों के छात्र/छात्राओं एवं शिक्षक वर्ग ने भाग लिया। शुक्रवार ३१ अक्तूबर, २०१४ तथा ०१ नवम्बर, २०१४ को प्रातः तथा रात्रि के सत्रों में भारत वर्ष के प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री अनुज शास्त्री ने धर्म कर्म तथा भारत वर्ष के महापुरूषों के चरित्र पर विस्तार से चर्चा की। इसी प्रकार से युवा भजनोपदेशक पण्डित सुमित्र आर्य जी ने अपने सहयोगी ढ़ोलक वादक श्री गोविन्द आर्य के साथ आध्यात्मिक भजनों से श्रोतागणों को मन्त्र मुग्ध किया जिसने वातावरण को भक्तिमय बनाया। ३१ अक्तूबर, २०१४ को दोपहर के सत्र में डी. ए. वी. विद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा वैदिक परम्परा पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसकी सभी ने भरपूर प्रशंसा की। १ नवम्बर, २०१४ को महिला सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें ''समाज का आधार स्तम्भ'' विषय पर प्रवक्ताओं ने अपने–अपने विचार रखे जिसमें महिलाओं के संवैधानिक अधिकारों उनकी सुरक्षा तथा महिलाओं की समस्याओं का तुरन्त निवारण करने के साथ–साथ महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत रहना चाहिये, क्योंकि नारी समाज और परिवार के रीड़ की हड्डी होती है। स्वामी दयानन्द जी ने महिलाओं को महान् और ऊँचा स्थान दिया। बालक के निर्माण में भी प्रथम भूमिका नारी की है। महिलाओं को चाहिये कि वह अपनी बेटियों को शिक्षित करने में पूर्ण सहयोग दे ताकि वह राष्ट्रहित में कार्य करते हुये देश का गौरव बढ़ा सकें।

दिनांक २ नवम्बर, २०१४ को इस चार दिवसीय ८५ वें वार्षिक उत्सव का समापन गायत्री महायज्ञ, पूर्णाहुति व विद्वानों के भजन तथा प्रवचन, सम्मान समारोह के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के महामन्त्री तथा आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी के प्रधान श्री रामफल सिंह आर्य के संवोधन उपरान्त आर्य समाज मण्डी के प्रधान श्री रत्न लाल वैद्य ने सभी का धन्यवाद करने के पश्चात् आरती तथा शांति पाठ से इस उत्सव का समापन हुआ उसके बाद सभी ने ऋषि लंगर में मण्डयाली धाम का आनन्द लिया।

–देवी चन्द कपूर, मन्त्री,
आर्य समाज मण्डी

साभार

श्री प्रेम लाल शर्मा वार्ड न. ०१, मकान न. १३३ कृष्णानगर, हमीरपुर ने ₹ ५००, चौधरी मंगल दास, पूर्व पी.ए. गांव व डा. ढ़ावण, तह. बल्ह, जिला मण्डी ने ₹ ५००, श्री सोम कृष्ण शर्मा, गांव बोहट, डा. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹ ५००, बिहारी लाल, पूर्व कला अध्यापक, गांव भौर, डा. कनैड, जिला मण्डी ने ₹ १०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मोबाइल : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, संरक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, संरक्षक एवं विशेष सलाहकार, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 090348–17118, 094669–55433, 01733–220260
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

मैं अगस्त १९६६ में प्राचार्य पद से राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला डैहर से सेवानिवृत हुआ। यह मेरा सौभाग्य है कि १९५५ में मैट्रिक करने के उपरांत सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और लोक निर्माण मन्त्री परम् आदरणीय पं. गौरी प्रसाद जी ने मुझे शिमला में ही विद्युत विभाग के कार्यालय में नियुक्त कर दिया। जिससे मुझे आर्य समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में गौ रक्षा आन्दोलन और हिन्दी रक्षा आन्दोलन में पधारे हुए महानुभावों तथा साधु सन्यासियों से इस क्रांतिकारी संस्था के बारे में और ज्ञान प्राप्त होता रहा और मैं आर्य समाज की विचारधारा से अत्यन्त प्रभावित हुआ। अपनी समस्त सरकारी नौकरी में मैं जिला मण्डी अध्यापक संघ का प्रधान रहा और अध्यापक समाज भी मुझे चाहता रहा। सेवानिवृति के उपरांत मैं अपने परम् मित्र ८१ वर्षीय बाहोट के भीष्मपितामह श्री भक्त राम आजाद से मिलकर उनके मार्ग दर्शन में बुजुर्गों के साथ सम्पर्क बनाए रखने में समर्थ रहा। परिणाम स्वरूप आज दिन तक मैं जबकि जिला पैंशनर कल्याण संघ का बुजुर्गों द्वारा निर्वाचित अध्यक्ष रहा। इन १८ वर्षों में मैंने पैंशनरों के सुख–दुख, बसंत–पतझड और धूप–छाया सभी को नज़दीक से देखा और यथाशक्ति और सामर्थ्य से उन बुजुर्गों की दुखती रग पर सहानुभूति और सहयोग का मरहम लगाने का भरपूर प्रयत्न किया। हर महीने पैंशनरों के बैठकों में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा और हमें सदा और सर्वदा के लिए छोड़ चुके बुजुर्ग पैंशनरों को भी समय–समय पर श्रद्धांजलि सुमन प्रस्तुत किये जाते रहे। मैंने पैंशनरों की सभी समस्याओं में ड़ा. अमर नाथ शर्मा, रणजीत सिंह, लालमन शर्मा और मंगत राम चौधरी के सहयोग से निकट से भांपने का प्रयत्न किया और अपने इन बुजुर्ग साथियों की समस्याओं के हल का समाधान कुछ इस प्रकार निकाल पाया।

पारिवारिक शांति, सुख का आनन्द वरिष्ठ नागरिक को पूर्ण रूप से तभी मिल सकता है जब वह अपने घर और बाहर में सभी से मिलजुल कर रहे और क्रोध का परित्याग करे जोकि शांति और सुख की फुलवाड़ी को पतझड़ में परिवर्तित करते हैं। मैं यह भी अनुरोध करता हूं कि जिन परिवारों में प्रेम, सुख की शीतल बहार बहती है, वहां सभी प्रकार का मंगल–मांग्लय छाया रहता है और उस परिवार के समस्त जन अपने बुजुर्ग की सेवा में कोई और किसी प्रकार की कमी नहीं रहने देते। दुखी वे परिवार तथा बुजुर्ग ही हैं जिन्होंने अपने समस्त जीवन में अमर्यादा और असंतुलन का जीवन व्यतीत किया। जिस जीवन में हम भांग–चरस, सुल्फा, मदिरा, तंबाकू, खैनी आदि नाना प्रकार के व्यसयनों कों अपने कंठ का हार मानकर जीवन यात्रा शुरू करते हैं और यह चाहते हैं कि हमारी संतानें इन बातों से सर्वथा मुक्त रहें तो यह कैसे संभव है। यह तो कवि के शब्दों में यही बात हुई :

कर कुसंग चाहे कुशल, तुलसी यह अफसोस,
महिमा घटी समुद्र की, रावण वसयो पड़ोस।

हमारे आचार–व्यवहार, रहन–सहन ही हमारी उच्चता और नीचता का प्रतीक होते हैं। हम स्वयं ही अपने सुख और दुख के जनक होते हैं। हमारी समस्त मान–मर्यादा, हमारे आचार और विचारों पर निर्भर करती है। बुजुर्गों को हितकारी नियम पालने में अग्रसर रहना चाहिए तभी ये उन्नति के शिखर पर आसीन होते हैं। मैथिलीशरण गुप्त जी ने हमारे पूर्वजों की महिमा का वर्णन करते हुए ठीक ही कहा है :

उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है,
गाते नहीं उन्हीं के गुण हम, गा रहा संसार है।
वे धर्म पर करते न्यौच्छावर तृण समान शरीर थे,
उनसे वही गम्भीर थे, वरवीर थे, ध्रुववीर थे।
उपदेश उनके शान्तिकारक थे, निवारक शोक के,
सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैशी लोक के।

हमें जीवन में किसी प्रकार ऋषि दयानन्द के अनुसार परोपकार के कार्य करते हुए इस नश्वर शरीर का त्याग करना चाहिए। यही मानव जीवन की सबसे बड़ी भक्ति और शक्ति है। इस सम्बन्ध में कबीर दास का यह कथन हमें अपनी गांठ में बांध लेना चाहिए, जिसमें वह कहते हैं :

कबीरा जब हम जन्मिया, जग हंसे हम रोये,
ऐसी करनी करि चलो, हम हंसे जग रोये।

अर्थात् हम हंसते–हंसते संसार को विदा करें और संसार हमारी अनुपस्थिति को सबसे बड़ी कमी समझे। आज जीवन का यही सबसे बड़ा कर्म, धर्म और मर्म होना चाहिए। तुलसी दास जी ने धर्म की परिभाषा करते हुए कहा है :
पर हित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीडा सम नहीं अधमाई।

मन वचन और कर्म से दूसरों का भला करना और चाहना ही सबसे बड़ा धर्म है और दूसरों का अहित करना और चाहना ही सबसे बड़ा अधर्म और कुकर्म है। मानव जीवन की बेल को हरा–भरा रखने के लिए यह परम् आवश्यक है कि हम उसमें शांति और सुख की वर्षा करते रहें। आज हमारे पूर्वज ७० साल तक पहुंचते–पंहुचते ही अनेकों व्याधियों का शिकार हो कर परलोक गमन कर जाते हैं जो अपने आप में एक बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण और शोचनीय बात है। वेदों के अनुसार १०० साल कर्म करते हुए जीने की इच्छा रखनी चाहिए। दूसरों पर निर्भर होने के बजाय अपने पैरों पर मजबूती से

thearyasamaj.org

खड़े रहने का संकल्प करना चाहिए। किसी कवि ने ठीक ही कहा है,

अपने बल पर आप खड़ा जो हो सकता है
वही मनुष्य निज कुल कलंक को धो सकता है।
निज बल का विश्वास बना है जिस के मन में,
उसे सिद्धियां सर्वत्र मिलेंगी रण में, वन में।।

आज प्रदेश सरकार का यह दायित्व है कि पैंशनरों को दिये गये भत्ते को मूल पैंशन में शामिल करने के आदेश जारी करे ताकि बुजुर्ग पैंशनर अपने जीवन के अंतिम पड़ाव को शांति, सुख और धैर्य से व्यतीत कर सकें। हम केवल यही चाहते हैं कि हिमाचल सरकार प्रदेश के पैंशनरों के दुखों को दूर करे और वरिष्ठ नागरिकों को समस्त सुविधाएं उपलब्ध करवाए। जैसे कि जापान, ब्रिटेन, अमेरिका और अन्य देशों के वरिष्ठ नागरिकों को उपलब्ध हैं। जो बुजुर्ग अपने जीवन को व्यतीत करते–करते अन्तिम बेला में पहुंच गये हैं उनकी समस्त सुख–सुविधा का ध्यान मानवीय आधार पर सरकार को करना ही चाहिए। तभी मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः और आचार्य देवो भवः का स्वप्न भूमंडल पर साकार और सफल हो सकता है।

–कृष्ण चन्द आर्य

दुःख का मूल 'मिथ्या ज्ञान'

♦राज कुकरेजा, ७८६/८ अर्बन एस्टेट, करनाल, हरियाणा

दुःख जिसे कोई नहीं चाहता है, पर दुःखी हैं और सुख जिसे सब चाहते हैं पर सब पूर्ण रूप से सुखी नहीं हैं। जो इन्द्रियों के अनुकूल वो सुख और जो इन्द्रियों के प्रतिकूल वो दुःख। ऋषि पतंजलि जी ने योग दर्शन में एक सूत्र दिया है–हेय हेयहेतु, हान हानोपाय। अर्थात् दुःख, दुःख का कारण, सुख, सुख का उपाय। वे कार्य–कारण के सम्बन्ध को मानते हैं कि कारण को हटा देने से कार्य स्वयं हट जाता है। सभी दुःख से छूटना चाहते हैं परन्तु दुःख के कारण को नहीं पकड़ पाते, सोचते हैं कि सुख का उपाय अधिक से अधिक धन की तिजोरी भर लेने से तथा जिन साधनों से व भोग सामग्री से शारीरिक सुख मिले उसका अधिक से अधिक मात्रा में संग्रह कर लेने से वे पूर्णतः सुखी हो जायेंगे। यह उन की मिथ्या धारणा है। प्रायः देखा जाता है कि संसार के सारे भोग–पदार्थ प्राप्त कर भी मानव अशांत रहता है। ऋषि पतंजलि जी का मानना है कि विवेकी जन संसार के सभी विषय–भोगों में चार प्रकार का दुःख मान कर इन्हें छोड़ देते हैं। इस सूत्र को समझा ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने जिन का जन्म हुआ एक सम्पन्न परिवार में, घर में किसी भी प्रकार का अभाव न था, पर उन्हें सच्चे सुख की तलाश थी जिस कारण घर परिवार का त्याग कर सच्चे सुख की खोज में चल पड़े। महात्मा बुद्ध बचपन में जिन का नाम सिद्धार्थ था, जन्म राज महल में हुआ, गृहस्थी बने, एक बालक को जन्म दिया परन्तु एक रात को गृह त्याग दिया, और सच्चे सुख की खोज में निकल पड़े ऋषि का मानना है कि संसार में –'कुत्रऽपि कोऽपि सुखी न भवति।' गुरु नानक देव जी ने इसे सरल भाषा में कहा कि ''नानक दुखिया सब संसार''।

सांख्य दर्शन के रचयिता ऋषि कपिल संसार के समस्त दुःखों का वर्गीकरण तीन प्रकार के दुःखों में करते हैं एक आध्यात्मिक जो आत्मा, शरीर में अविद्या, राग, द्वेष, मूर्खता और ज्वर पीड़ा आदि से होता है। दूसरा आधिभौतिक जो शत्रु, व्याघ्र और सर्प आदि से प्राप्त होता है। तीसरा आधिदैविक अर्थात् जो अति वृष्टि, अनावृष्टि, अति उष्णता, मन और इन्द्रियों की अशांति से होता है। अधिकांश प्राणी आध्यात्मिक दुःख जो शरीर और आत्मा सम्बन्धी है उस से पीड़ित रहते हैं। अविद्या ही इसका मूल कारण है। दर्पण में शरीर को देखते हैं, स्वयं को केवल शरीर ही मान लेते हैं। शरीर का पालन–पोषण और इसके सजाने–संवारने को ही अपना धर्म मान लेते हैं और आत्मा जो शरीर का स्वामी है उसकी उपेक्षा कर देते हैं। जब तक आत्मा को उसका भोजन जो ईश्वरीय आनन्द है नहीं दिया जाएगा, जीवन में शान्ति का स्वप्न, स्वप्न ही रहेगा। हम ने आत्मा को शरीर–रूपी कमरे में बंद कर दिया है। दिन–रात शरीर को सजाने में लगे रहते हैं। आत्मा की भूख मिटाने की कभी न तो चिंता की, न परवाह की, परिणाम स्वरूप जीवन में अशांति का साम्राज्य छाया हुआ है। अविद्या के ही कारण जड़ मन को चेतन समझने लगते हैं और समझते हैं कि मन स्वयं ही विचारों को उठाता रहता है। अज्ञानता के कारण भूल जाते हैं कि आत्मा ही मन का स्वामी है, आत्मा की इच्छा के बिना मन कुछ भी करने में असमर्थ है। मन में अनावश्यक व हानिकारक विचारों को उठा कर हम स्वयं ही अपनी हानि कर रहे होते हैं। मन की शांति के लिए मन में सकारात्मक विचारों को हमें अधिक महत्त्व देना चाहिए। मन में नकारात्मक विचार मन को अशांत बनाते हैं। नकारात्मक विचारों से ही पहले हम स्वयं को दुःखी करते हैं। इसलिए अति आवश्यक है कि मन को शिव संकल्प वाला बनाएं। मन एक ऐसी नदी है जिसका प्रवाह निरंतर बह रहा है और उसे मनुष्य अपनी बुद्धि का उचित प्रयोग करते हुए कल्याण की ओर बहा सकता है, यदि बुद्धि प्रयोग समुचित न करे तो पाप की ओर भी बहा सकता है।

सारा विश्व अज्ञान में जीने के कारण दुःख के सागर में गोते लगा रहा है। अपेक्षाओं के कारण भी हम दुःखी हो रहे

thearyasamaj.org

हैं। मिथ्या अभिमान के कारण धारणा बना लेते हैं कि जो चाहेंगे वे इच्छाएं पूर्ण हो जायेंगी। किन्तु ऐसे शत–प्रतिशत कभी किसी की इच्छा पूर्ण नहीं होती और भौतिक स्तर पर सब कामनाओं की पूर्ति हो ही नहीं सकती। हम चाहते हैं कि सभी लोग व सभी परिस्थितियाँ हमारे ही अनुकूल हों, जो असम्भव है, क्योंकि कर्म करने में सब स्वतंत्र हैं। कर्त्ता तो कहते ही उसे हैं जो कर्तुम, अकर्तुम अन्यथा कर्तुम में स्वतंत्र हो अर्थात् चाहे तो करे, न चाहे तो न करे या उल्टा करे। सब के अपने विभिन्न संस्कार और योग्यताएं होती हैं। प्रत्येक में जन्म–जन्मान्तर के संस्कार अलग–अलग हैं। ईश्वर ने कर्म का अधिकार तो सब को दिया है। अपने कर्तव्य का पालन करते नहीं हैं, दूसरों के कर्तव्य पर अपना अधिकार समझने लगते हैं। परिस्थितियाँ भी सब के लिए एक जैसी कभी नहीं हो सकतीं। कुम्हार को धूप चाहिए तो किसान को वर्षा, बाह्य जड़ व चेतन साधन हमारी खुशी का स्त्रोत हैं, ये भी एक बहुत बड़ी मिथ्या धारणा है। बाह्य (भौतिक साधन) चेतन (सन्तान व परिवार) सब अनित्य हैं, जो स्वयं, अनित्य, परिवर्तशील हैं वे हमें क्या सुख देंगे। बड़ी विचित्र बात लगती है कि सबका रिमोट अपने हाथ में रखना चाहते हैं तो अपना रिमोट दूसरों के हाथों क्यों रख कर दुःखी हो रहे होते हैं।

आज मनुष्य स्वार्थी व संकीर्ण बनता जा रहा है। सब सुख सामग्री अपने पास ही बटोर कर रखने का स्वभाव बनाता जा रहा है। विडम्बना तो यह है कि अपने दुःख से इतना नहीं है, जितना दुःखी दूसरों के सुख से है। मनुष्य अपने अभाव से इतना दुःखी नहीं है, जितना दूसरे के प्रभाव से दुःखी होता है। अभाव उसे इतना नहीं अखरता जितना ये अखरता है कि दूसरों के पास क्यों है। अपने भीतर जलन की ज्वाला उत्पन्न करके स्वयं ही जलता रहता है। दूसरों से जलन और दूसरों से व्यर्थ की आशाएं यदि ये दो चीजें हम छोड़ दें तो हम इस बहुमूल्य मानव जीवन को बहुत आनन्द से जी सकते हैं, अन्यथा व्यर्थ ही इसे खो देंगे। इसे इस दृष्टांत से भली प्रकार समझ सकते हैं–रामलाल और बाबू लाल दो वरिष्ठ नागरिक हैं। दोनों घनिष्ठ मित्र हैं, दोनों परस्पर सुख–दुःख के साथी हैं। रामलाल का अपने घर में कोई मान–सम्मान नहीं हैं, उपेक्षित सा जीवन या यूं कहें वो अपने घर में कड़वे घूंट पीकर जीवन जी रहा है। वह सोचता है कि उसका मित्र बाबू लाल भी उसके ही समान उपेक्षित जीवन जी रहा होगा। लेकिन एक दिन जब उसका भ्रम टूटा, उसे पता चला कि मित्र तो बड़े मजे में बहुत ही सम्मान पूर्वक जिन्दगी गुजार रहा है तो अपने मित्र से कन्नी काटने लगा। उसकी छाती पर मानो सांप लोटने लगा हो। मित्र के साथ उसका व्यवहार एकदम बदल गया। बाबूलाल समझा गया कि उसका मित्र उसकी सम्मानित जिन्दगी को नहीं पचा पा रहा है। बाबूलाल ने रामलाल को कहा–देखो मित्र! ऐसा नहीं है जैसा तुम समझ रहे हो। ये सब मेरे परिवार वाले तुम्हारे सामने नाटक कर रहे होते हैं। अब राम लाल की संतुष्टि हो गई कि केवल वो ही दुःखी नहीं है, उसका मित्र भी उसी के समान दुःखी है। ऋषि पतंजलि सुंदर सा दृष्टिकोण देते हैं कि सुखी लोगों से मैत्री, दुखी पर करुणा, पुण्य आत्मा को देख कर प्रसन्नता और अपुण्य आत्मा की उपेक्षा कर देने से चित्त प्रसन्न रहता है। प्रसन्न चित्त से एकाग्रता होती है। एकाग्र चित्त से ध्यान लगता है और ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना में भी मन लगता है। सब दोष, दुःख छूट कर परमेश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण–कर्म–स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी घबराता नहीं और सब को सहन करने का सामर्थ्य उसे ईश्वर प्रदान करता है। यह तो हो नहीं सकता कि एकाग्र मन से ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना करें और ईश्वर के आनन्द से वंचित रहें। यदि वंचित है तो देखें कि भूल कहाँ हो रही है, इस कारण क्या है ? शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है। अग्नि से शीत निवृत्त नहीं हो रहा तो इसका कारण है कि या तो अग्नि मंद है या फिर अग्नि से दूर बैठे हैं। इसी प्रकार ईश्वर ध्यान में ईश्वर के आनन्द की उपलब्धि नहीं हो रही तो कारण को जानें कारण है अविद्या जिस कारण ईश्वर के स्वरूप को जाने बिना उपासना कर रहे होते हैं। यथार्थ ज्ञान से ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जान कर जब अपने हृदय में ईश्वर के सच्चे स्वरूप की उपासना करते हैं, तब ईश्वर हृदय में अच्छी तरह प्रकाशित हो कर अविद्या अन्धकार को नष्ट कर सुखी करते हैं।

मिथ्या ज्ञान (अविद्या) दुःख का मूल कारण है तो यथार्थ ज्ञान ही सुख का मूल कारण है। यथार्य ज्ञान अर्थात् जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही जानना। जड़ को जड़, चेतन को चेतन, सुख में सुख और दुःख में दुःख को समझना। यथार्य ज्ञान से ईश्वर, जीव, प्रकृति को अलग–अलग जान लेना ही दुःख नाश करने का उपाय है। योग के आठ अंगों को व्यवहार में लाने से यथार्थ ज्ञान का विकास होता है और अविद्या आदि दोषों का नाश होता जाता है। मिथ्या ज्ञान का हटना ही दुःख का निवारण है।

"दूर अज्ञान के हों अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली जिंदगी दे।"

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत।।

thearyasamaj.org

ओ मृत्यु! तू हमारी शिक्षिका है

•इन्द्रजित् 'देव', चूना भट्टियां, सिटी सैन्टर के निकट, यमुनानगर

"मृत्यु एक अनिवार्य घटना है जिसे सदैव के लिए टाला नहीं जा सकता।" ये शब्द यहाँ गाधौली में स्थित एक वृद्धाश्रम में प्रसिद्ध वैदिक मिशनरी पं. इन्द्रजित् देव ने एक शोक विमोचन सभा में कहे। एक परिवार के युवा पुत्र की मृत्यु के कारण यह सभा आयोजित की गई थी। अथर्ववेद के ७/१/१ वाले मंत्र "अन्तकाय मृत्येव नमः....." का उद्धरण देकर पं. इन्द्र जित् देव ने अपने भाषण में आगे कहा कि हमें अन्तक मृत्यु को नमन करना चाहिए। मृत्यु के साथ हमारा जन्म–जन्मान्तर का रिश्ता है तथा यह हमें बहुत प्रकार की शिक्षा देती है। दो पैरों वाले तथा चार पैरों वाले सभी प्राणियों पर इसका शासन रहता है। सोए हुए लोगों को जगाने के लिए मृत्यु महत्वपूर्ण भूमिका है। वह बार–बार हमें सावधान करती है। इसी की आवाज़ सुनकर ही मूल शंकर जागा जब अपनी बहन व चाचा की मृत्यु को देखकर ही उसने घर के ऐश्वर्य, घर के सभी सदस्यों व घर की सुख –सुविधाओं का परित्याग करके जंगल की राह पकड़ सच्चे शिव की खोज आरंभ की थी। यही युवक इतिहास में महर्षि दयानन्द सरस्वती नाम से सुप्रसिद्ध हुआ। राजकुमार सिद्धार्थ ने भी मृत्यु को देखकर ही वैराग्य को प्राप्त किया था व बाद में महात्मा बुद्ध नाम से प्रसिद्धि पाई थी। मृत्यु की घटनाओं को देखकर ही इन महापुरूषों ने अपना–अपना सम्पूर्ण भौतिक एश्वर्य त्याग दिया था तथा संसार से अज्ञान, अविद्या, अन्ध–विश्वास, पाखण्ड मोह–ममता व भोग–विलास आदि का विनाश करने हेतु तब साधना का मार्ग चुना था। इसी प्रकार सन् १८८३ ई. को महर्षि दयानन्द के मृत्यु–दृश्य को प्रत्यक्ष देखकर ही घोर नास्तिक पं. गुरूदत्त विद्यार्थी आस्तिक बन गया था। महर्षि दयानन्द की ईश्वर के प्रति गहरी व अटूट निष्ठा को देखकर ही गुरूदत्त ने मान लिया था कि ईश्वर है तथा सही रूप में जानने मानने वाले लोगों को मृत्यु का भय भी दुःख नहीं देता। एक सच्चा व पूर्ण आस्तिक विद्वान् ऋषि दयानन्द जिस मस्ती व जिस शान्ति से मर रहा था, उसे देखकर गुरूदत्त का हृदय आनन्द से शून्य हो चुका था, उसी गुरूदत्त को दयानन्द की मृत्यु ने ही आस्तिक बना दिया था, तथा उसके हृदय में ईश्वर के प्रति श्रद्धा का सुगन्धित पवन बहने लगा था।

पं. इन्द्रजित देव ने यह भी बताया कि इंग्लैण्ड का सुप्रसिद्ध अनीश्वरवादी विचारक व प्रचारक था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में उसने एक अनीश्वरवादी संस्था स्थापित करके संसार के कई देशों में नास्तिकता का प्रचार किया था। वर्तमान पाकिस्तान के एक महत्वपूर्ण महानगर लाहौर में उसके अनुयायियों ने एक बड़ा भवन बनाया था जिसका नाम "ब्रैडलाहाऊस" रखा गया था। ब्रैडला कहा करता था कि यदि मनुष्यों में भी जीव के अस्तित्व को मानते हो तो कुत्तों में भी जीव को मानना ही पड़ेगा। इसाई दार्शनिक शरीर में जीवात्मा के अस्तित्व को मानते नहीं। इसी आधार पर ब्रैडला भी मनुष्यों में जीव को मानता न था परन्तु जब उसकी मृत्यु निकट आ गई थी तो वह आस्तिक बन गया था। वह कहने व मानने लगा था कि मैं अनुभव करता हूँ कि कोई अज्ञात शक्ति मुझे इस देह से बाहर निकलने पर विवश कर रही है। मृत्यु की घटना कोई नई घटना तो न थी। मृत्यु की घटना सब देखते हैं परन्तु भेद यदि कोई है तो यह है कि हममें से कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो स्वयं मरना चाहता हो। भेद व्याख्या का है। भिन्न–भिन्न मान्यताओं के कारण ही मतभेद हैं। ब्रैडला मानने लगा था कि मेरी देह तो जड़ पदार्थ है। देह में यह शक्ति नहीं है कि मुझे बाहर निकाल सके। हम देह को छोड़कर इससे बाहर निकलना नहीं चाहते। इससे स्वतः सिद्ध होता है कि कोई अदृश्य शक्ति अवश्य है जिसकी व्यवस्था से हमें देह से निकलना पड़ेगा। कोई तीसरी शक्ति अवश्य है जो हमें एक देह से निकलने पर विवश करती है। वही सत्ता हमें देह से निकालती है। वह कहती है कि हो चुका हमारा इस एक जीवन का खेल समाप्त इस आधार पर भी हमें यह मानना पड़ता है कि परमात्मा की सत्ता व अस्तित्व है और हमें कुछ ही दिनों के लिए यह एक शरीर मिला है। इस शरीर से निकालकर प्रभु हमें एक नये शरीर में पहुँचाने का कार्य मृत्यु की घटना से ही संभव कर सकता है।

पं. इन्द्रजित् देव ने आगे बोलते हुए कहा कि बहुत गम्भीर रूप में बीमार पड़े व कराह रहे व्यक्ति को मृत्यु ही इन से त्राण दिलाती है व नया, फुदकता व मुस्कराता हुआ नया जीवन दिलाने में सहायता करती है। बड़े–बड़े घमण्डियों के घमण्ड यह मृत्यु ही चकनाचूर करती है व उन्हें पापों से मुक्त रहने की प्रेरणा देती है। इसके अतिरिक्त मृत्यु हमें पापों से मुक्ति दिलाती है। जब हम पाप करते हैं, तो उसका माध्यम यह शरीर ही होता है। यदि हम यह जान लें–मान लें कि मृत्यु के बाद मिलने वाले नये शरीर के माध्यम से हमें पूर्वकृत पापों का फल भोगना ही पड़ेगा, इससे बच नहीं सकते। उन्हें भोगना ही पड़ेगा तो हम मृत्यु से भयभीत रहते हैं। इस भय से बचने हेतु ही हम पाप करने से बचते हैं। अन्त में वैदिक मिशनरी ने यह कहा कि हमारे जितने भी सम्बन्धी हैं, वे सभी

thearyasamaj.org

जीते जी तक ही हैं। इन सम्बन्धों का आधार शरीर ही है। शरीर छूटते ही हमारे सभी सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं। When a man expires, then all relations also expire. मृत्यु होने पर सभी नाते टूटते हैं। मरा व्यक्ति हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता, कुछ संवार भी नहीं सकता। अतः उसके वियोग में दुःखी होकर हमें ईश्वर से व अपनी भविष्य की जिम्मेदारियों से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु यौवनावस्था में होती है तो मृत्यु हमें तब यह शिक्षा देती है कि हमें वे गलतियाँ नहीं करनी चाहिए, जिन गलतियों के कारण मृतक की मृत्यु यौवनावस्था में ही हो गई है—अन्तकाय मृत्यवे नमः।

''केन उपनिषद''

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

यूं तो (१०८) एक सौ आठ के लगभग उपनिषद हैं परन्तु स्वामी दयानन्द जी ने ग्यारह उपनिषदों को मान्य किया है। इनमें एक 'केन उपनिषद' है। केन का अर्थ है 'किस से' तथा उपनिषद का अर्थ है निकट बैठना। अतः परब्रह्मा के निकट बैठकर यह जानना कि आत्मा किस से संचालित होती है। पांचों ज्ञान इन्द्रियाँ, मन तथा प्राण किस से होते हैं। अज्ञान क्या है ? परब्रह्म को कैसे जाना जाता है। अंहकार से सब कुछ निष्फल हो जाता है। सांसारिक उपलब्धियाँ क्यों व्यर्थ है इन सबका उत्तर हमें केन उपनिषद में मिलता है। उपनिषदों को ही वेदान्त की संज्ञा दी है। क्योंकि इन्हें वेदों का अन्तिम भाग माना जाता है। यह भी 'प्रश्न उपनिषद' की भांति प्रश्न—उत्तर रूप में लिखा गया है। यह जीवन सम्बन्धी जटिल प्रश्नों के उत्तर देता है। केन उपनिषद के चार खण्ड हैं। इससे हमें जीवन के जटिल प्रश्नों का उत्तर मिलता है। अध्यात्म ज्ञान मिलता है।

परमेश्वर : परमेश्वर निराकार, सर्वशक्तिमान है। वह हर स्थान पर रहने वाला फिर भी अदृश्य है। वह निर्विकार है तथा अज्ञान से दूर है। उसे आंखें नहीं देख सकती। वाणी के पास उसके वर्णन के लिये शब्द नहीं। मन उसकी कल्पना से दूर है। वह ज्ञान स्वरूप है। सब शक्तियों का स्त्रोत वही है। उसी की पूजा करनी चाहिये। हमें जो कुछ मिला उसी के प्रताप से मिलता है।

आत्मा : आत्मा चेतन स्वरूप, ज्ञानस्वरूप तथा अमर है। जिसने यह भेद जान लिया कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, समझो वह अमर हो गया। आत्मा को जानने के बाद ही ब्रह्म को जाना जा सकता है। आत्मा उस प्रभु से संचालित होती है। आत्मा द्वारा ही कान, आंख, मन, प्राण, वाणी आदि संचालित होते हैं। वही आत्मा को निर्देशित करता है। हम अज्ञानवश शरीर को ही सब कुछ मानते हैं।

मानव जीवन का उद्देश्य : हमारे जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है। सांसारिक उपलब्धियाँ प्राप्त करना नहीं। दूसरा उद्देश्य उस परमेश्वर को जानना है। हमारा जीवन निष्फल है यदि हम उसे जानने का प्रयास नहीं करते। सच्चे ज्ञान के बिना उस परमेश्वर को हम प्राप्त नहीं कर सकते। जो ब्रह्म को जानते हैं वे विनम्र हो जाते हैं।

अंहकार : अंहकार जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है। जो यह कहता है कि मैं उस ब्रह्म को जानता हूँ और उस पर गर्व करता है, समझो कि उसने जाना ही नहीं। एक बार देवताओं को भी अपनी शक्ति पर अंहकार हो गया क्योंकि उन्होंने असुरों को परास्त किया था। वे यह भूल गये कि ब्रह्म ही उनकी शक्तियों का स्त्रोत है। अतः ब्रह्म यक्ष का रूप धारण कर देवताओं के सामने प्रकट हुए। देवता यह न जान सके कि यक्ष कौन है ? अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिये सर्व प्रथम उन्होंने अग्निदेव को भेजा। यक्ष ने अग्नि देव से प्रश्न किया कि वह कौन है और उसकी शक्ति क्या है ? अग्नि देव ने उत्तर दिया, ''मैं अग्नि देव हूँ। मुझ में हर वस्तु को भस्म करने की शक्ति है।'' यक्ष ने उसके सामने एक तिनका रख दिया और उसे जलाने के लिये कहा। परन्तु अग्नि देव पूर्ण प्रयास से भी उसे जला न सका और लज्जित हो गया। तब देवताओं ने वायु देव को यक्ष के जानने के लिये भेजा। यक्ष ने उससे भी यही प्रश्न किया। वायु देव ने कहा—कि वह उसके सामने पड़ी हर वस्तु को उड़ा सकता है। यक्ष ने उसके सामने वही तिनका रख दिया परन्तु वायुदेव उसे हिला तक न सका। वह भी लज्जित हो लौट गया। अब देवताओं ने अपने राजा इन्द्र को उसे जानने के लिये भेजा परन्तु उसे मिला ही नहीं। इन्द्र, बुद्धिमान, ऐश्वर्य से परिपूर्ण तथा शक्तिशाली था। इन गुणों के होते हुये भी इन्द्र उसे देख तक न सका। अतः यहाँ यह बताने का प्रयास किया गया है कि बुद्धि, धन एवं शक्ति द्वारा भी ब्रह्म मिल नहीं सकता। इन्द्र वहां से लौट रहा था तो रास्ते में उसे 'उमा' देवी मिली। यक्ष के बारे इन्द्र ने उमा से जानना चाहा। उमा अध्यात्म ज्ञान की देवी है। उसने बताया कि वह सर्वशक्तिमान ब्रह्म है जो सारी शक्तियों का स्त्रोत है। अध्यापक ज्ञान द्वारा ही जाना और पहचाना जा सकता है। उसी द्वारा उस के दर्शन हो सकते हैं तथा मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। ब्रह्मज्ञान के लिये शुचिता, संयम और त्याग भी आवश्यक हैं।

thearyasamaj.org

१३ वां वार्षिक उत्सव

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

प्रति वर्ष की भांन्ति श्रीमती नीलां आर्या एवं बीरी सिंह आर्य ने अपने घर गांव मकेहड़ में ज्ञान की गंगा प्रवाहित करने का श्रेय प्राप्त किया। ७ नवम्बर से १० नवम्बर तक भक्ति भावना से ओतप्रोत ऋषि उत्सव में सभी गांव वासियों ने आध्यात्मिक ज्ञान का श्रवण कर अपने जीवन को धन्य किया। यज्ञ के ब्रह्मा दयानन्द मठ घण्डरां के संचालक स्वामी सन्तोषानन्द जी, जो स्वनाम धनी हैं अर्थात् संतोष और आनन्द की प्रतिमूर्ति हैं ने प्रतिदिन प्रातः सर्वश्रेष्ठ कर्म अग्निहोत्र में यजमानों से वेदमन्त्रों के साथ आहुतियाँ डलवाईं। स्वामी जी प्रतिवर्ष बीरी सिंह जी के वार्षिक उत्सव में पधार कर अपनी चरणरज से मकेहड़ की भूमि को पवित्र करके धर्म प्रेमियों को अपना आशीर्वाद प्रदान कर धन्य करना नहीं भूलते। यू.पी.बरेली से पधारे युवा भजनोपदेशक जीतेन्द्र ने लगातार चार दिन अपने सुरीले कण्ठ से उपदेश और भजनों की झड़ी लगा दी। श्रद्धालु मन्त्रमुग्ध होकर उनके भजनों का रसपान करते रहे। प्रभु की अनुपम रचना का भजन के माध्यम से वर्णन करते हुए :–

कहीं निर्मल धारा है, कहीं सागर खारा है,
कहीं गहरा पानी है, कहीं दूर किनारा है...

आज विश्व में ईश्वर, अल्ला और गॉड के नाम पर दीन, पन्थ और मत मतान्तरों में झगड़े हो रहे हैं :–

नाम का झगड़ा, रूप का झगड़ा, स्थान का झगडा है,
भक्त कहाने वालों में, भगवान का झगड़ा है....
ईश्वर राज रहा अब तक और रहे गा,
इन्सानों में नासमझी का ये अन्दाज़ रहेगा....

आज का मानव स्वार्थ की दलदल में फंसकर अपनी सम्पति और अहम को महत्व दे रहा है, जबकि जनसेवा में जीवन अर्पित करना सच्ची इन्सानियत है :–

ये तो माना मानव चोला, श्रेष्ठ तो जरूर है,
काहे का इन्सान, इन्सानियत से दूर है।

प्रभु का निज नाम 'ओ३म्' है। ओ३म् का गुणगान करते हुए जितेन्द्र जी ने गाकर इसका महत्व समझाया :–

सारे नामों में है ओ३म् नाम प्यारा
देने वाला है सबको सहारा
मुझे जगत् से क्या लेना–क्या लेना....

जनकल्याण के लिए ऋषि ने अपने जीवन की आहुति दे दी। धर्मवैरी और आडम्बर करने वाले कदम कदम पर बैठे थे। अन्धविश्वास में भटकते लोगों को सही मार्ग दिखलाया। चोर, उच्चके और चौधरी धर्म की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते थे। ऋषि महिमा के दो भजन सुनाऐ :–

दुःखियों को, मानव को, देने सहारा
कोई अवतार कलन्दर ऋषि का पहला नम्बर
ऋषि की कहानी सितारों से पूछो, खिजाओं से
पूछो, पहाड़ों से पूछो
कहाँ बैठकर समाधि लगाई, गंगा के पावन
किनारों से पूछो .....

देव दयानन्द अमर हो गये :–

जग में वेदों की जब तक निशानी रहे,
गंगा में जब तक पानी रहे
महर्षि की अमर ये कहानी रहे .....

जितेन्द्र जी ने लाख टके की बात बताई जो हमेशा अपने दुःखों को रोना रोते हैं, वे अपने जीवन की होली और दिवाली में मातम मनाते हैं। राष्ट्र निर्माण, समाज की शुद्धता और निज कल्याण के लिए सर्वश्रेष्ठ कर्म हवन अवश्य करें। घर गृहस्थी को सुचारू रूप से चलाने के सूत्र सत्यार्थ प्रकाश में विद्यमान हैं उसका अध्ययन करें। देश के गद्दारों को ललकारते हुए क्रान्तिकारी भजन :–

ऋषि ने ऐसा वैदिक बिगुल बजाया,
हम को पता न था सूरज बचकानी भाषा बोलेगा,
और सिंहासन पंडों जैसी वीरानी भाषा बोलेगा,
जाने किस दिन लाल किला मर्दानी भाषा बोलेगा....

कार्यक्रम के सूत्रधार वीरी सिंह जी ने मंच संचालन बड़ी कुशलता से निभाया। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कृष्ण चन्द आर्य सपत्नी कार्यक्रम में पधारे थे। परियोजना अधिकारी श्री योग प्रकाश नन्दा जी इस आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाग लेने परवाणू से आऐ थे। सुन्दरनगर से लेखक के साथ श्री मोहन सिंह एवं माया राम जी भी उत्सव में आऐ थे। आर्य समाज हमीरपुर के वरिष्ठ उपप्रधान श्री यशपाल शर्मा अन्य धर्मप्रेमियों के साथ उत्सव में पधारे थे। कार्यक्रम के सूत्रधार श्री वीरी सिंह जी ने भजन के माध्यम से समझाया जीवन के अन्त में लम्बी यात्रा पर जाने के लिए सुकर्म की नाव और ओ३म् नाम के चप्पू की आवश्यकता होती है :–

न कोई धर्म कमाया तूने न ही ऊँ ध्याया,
पगले माणुआं हो कियां होणा नदिया पारा....

'पानी केरा बुदबुदा अस मानुष की जात' इस भावना से ओतप्रोत जीवन का सार समझाते हुए :–

मानुस जन्म अनमोल रे,

thearyasamaj.org

इसे माटी में न रोल रे
अब तो मिला है, फिर न मिलेगा,
कभी नहीं, कभी नहीं

प्रभु की खोज में मानव कस्तूरी–मृग की तरह दर–दर भटक रहा है :–

सबसे बड़ा ऊँ का नाम
पक्षीगण भी इस को सिमरे, रटे सुबह और शाम,
बिना मुल्य के ऊँ नाम, लगे न कोई दाम....

सुन्दरनगर से पधारे श्री मोहन सिंह जी :– इस उत्सव के आयोजक श्री वीरी सिंह जी के दिल में आर्य समाज के प्रति जो जुनून और लग्न है वह अपूर्व है। ये हम सबके प्रेरणा स्त्रोत हैं। एक सौ तीस वर्ष पूर्व जब महर्षि दयानन्द ने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। अन्धविश्वासों में भटक रहे भारतवासियों को इस 'अन्धे युग' में सत्य के प्रचार प्रसार की महती आवश्यकता थी। अनेक मतमतान्तर सिर उठाने लगे थे, वेद–ज्ञान लुप्त हो रहा था। ऋषि के प्रयत्न से वेद जर्मनी से भारत लाये गये। त्रेता युग में किसी भी कार्य का श्री गणेश करने से पूर्व यज्ञ किया जाता था। महाराजा दशरथ द्वारा सम्पन्न पुत्रेष्टि यज्ञ इसका प्रमाण है। वेदों को पढ़ना सरल नहीं है। वेदों को श्रुति भी कहते हैं। अर्थात् सुनकर उनका ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है किन्तु खेद का विषय है कि हमारे पास उन्हें सुनने या आर्य समाज के क्रियाकलापों में भाग लेने का समय ही नहीं है। कम से कम संस्कार विधि सीखने के लिए हमें थोड़ा समय अवश्य निकालना चाहिए। रूढ़ियों, कुरीतियों और आडम्बरों से हमें बचना है। स्वर्ग और नरक अन्यत्र कहीं नहीं है, सुख विशेष का नाम स्वर्ग और दुःखी जीवन नरक तुल्य है।

श्री योग प्रकाश नन्दा जी ने मंच से अपने सम्बोधन में कहा श्रीमती नीलां आर्या एवं श्री वीरी सिंह जी प्रतिवर्ष धर्मचर्चा का आयोजन करके ऋषि–महिमा के सुन्दर भजन, प्रवचन का श्रवण सभी धर्मप्रेमियों को करवा कर पुण्य प्राप्त करते हैं। महर्षि ने पंच महायज्ञ करने पर अधिक बल दिया है। प्रथम ब्रह्म यज्ञ संध्याकाल में ओ३म् नाम का स्मरण कर ईश्वर से अपने लिए शक्ति, यश और बल मांगें। ईश्वर दायें–वायें, ऊपर–नीचे सब ओर से हमारी रक्षा करे। सभी ओर प्रभु के सुरक्षा–कवच से हम सुरक्षित होंगे तो फिर भय किस बात का ? देवयज्ञ–प्रातः सांय १६–१६ आहुतियाँ डालकर हवन करने से गृहस्थ में सुख, समृद्धि और शान्ति का साम्राज्य हो जाता है। बलिवैश्य देव यज्ञ–भोजन करने से पूर्व मीठा अन्न अग्नि को समर्पित करें। गाय, कौआ, चिड़िया आदि अन्य प्राणियों के लिए अन्न का भाग रखना सर्वोत्तम दान है। पितृ यज्ञ जीवित माता–पिता को इच्छानुकूल भोजन खिलाना सबसे बड़ा पितृ–श्राद्ध है। अतिथि गृहस्थी के लिए देवता समान है, उसकी यथोचित सेवा करना हमारा परम धर्म है। ये पंचयज्ञ करने के उपरान्त किसी भी दान, पूजा और तीर्थ यात्रा करने का आवश्यकता नहीं रहती। नन्दा जी ने अन्त में एक भजन गा कर सुनाया जिसकी सभी धर्म प्रेमियों ने सराहना की।

स्वामी सन्तोषानन्द जी ने सुरीला और शिक्षाप्रद भजन सुनाकर श्रोताओं को सावधान किया :–

कर्म खोटे तो ईश्वर का भजन गाने से क्या होगा
किया परहेज़ कुछ भी न, दवा खाने से क्या होगा
लिया खेत चुग चिड़ियों ने, तो पछताने से
क्या होगा....

ऋषि ने हमें सच्चा ज्ञान, सुख का भण्डार और वेद ज्ञान प्रदान किया :–

तज के घर और वार को, मात–पिता के प्यार को
करने पर उपकार को, वो भस्म रमा के चल दिये....

देव दयानन्द ने वैदिक बिगुल बजा कर गहरी नींद में सोये लोगों को जगाया।

मृग भटकता फिरता है, पर नाभि में कस्तूरी है,
सिर्फ ज्ञान की दूरी है.....

जीवन में सुकर्म करने का वर मांगते हुई प्रभु से याचना की :–

भगवान मेरी नैया पार लगा देना,
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना....

हे प्रभु! मानवता के कल्याणार्थ सदैव शुभ कर्म करता रहूँ और मेरी जीभा सदा तुम्हारा गुणगान करती रहे :–

ऊँ बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी,
तू मुखमण्डल में पड़ी पड़ी,
ऊँ नाम सर्वोत्तम प्रभु का, कहे वेद की कड़ी कड़ी
हरा भरा हो जाय जीवन, लगे ओ३म् की झड़ी झड़ी....

सभी धर्मप्रेमियों ने सुर–लय के साथ तालियाँ बजा कर स्वामी जी का साथ दिया।

वैदिक धर्म का बिगुल बजाने वाले देव दयानन्द की तपस्या और त्याग का गुणगान :–

तज के घर ओर बार को, मात–पिता के प्यार को,
करने पर उपकार को, भस्म रमा कर चल दिये
बज्र समान बनाया तनको, ईंट और पत्थर खाते रहे
सर्दी गर्मी भूखे प्यासे, लाखों कष्ट उठाते रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कृष्ण चन्द आर्य ने धर्मप्रेमियों को समझाते हुए

thearyasamaj.org

कहा–मानव जीवन अति दुर्लभ है, हमें परोपकार के कार्य करते हुए शान्ति पूर्वक जीना चाहिए। गृहस्थ में सभी छोटे बड़े सदस्यों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। घर स्वर्ग बन जायगा। माता आदि गुरू है। माताऐं अपनी सन्तानों को संस्कारवान बनाऐ। पुत्र ऐसा हो जो माता–पिता, परिवार और समाज का नाम रोशन करे।

जननी जने तो भक्त जने, या दाता या सूर।
अथवा जननी बांझ भली, काहे खोवे नूर।।

बच्चों को गलत–फलत सीख देकर डरपोक ने बनाऐं, उन्हें वीररस की शिक्षाप्रद कविता, कहानियाँ सुनाऐं। बच्चे निडर और साहसी बनेंगे। जीवन में अभिमान भूलकर भी न करें। दम्भी रावण चार वेदों और छह शास्त्रों का ज्ञाता था किन्तु अहम् भाव ही उसके विनाश का कारण बना। अन्त में श्री वीरी सिंह जी एवं उनकी धर्मपत्नी को १३ वें उत्सव के सफल आयोजन के लिए हार्दिक बधाई दी और ईश्वर से प्रार्थना की कि ये दोनों उत्तम स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु हों। आर्य समाज हमीरपुर के वरिष्ठ उपप्रधान श्री यशपाल शर्मा जी ने उत्सव का आयोजन करने के लिए वीरी सिंह जी की भूरी–भूरी प्रशंसा की। श्रोताओं को समझाते हुए कहा–जीवन में अन्धविश्वास, टोने–टोटक और धागा–तावीज पर कतई विश्वास न करें। बच्चों में सकारात्मक सोच पैदा करें।

मास्टर चमन लाल जी ने महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण पर अधिक बल दिया। भ्रूण–हत्या पर जोरदार प्रहार किया। बेटे के लिए हम देवी के आगे प्रार्थना करते हैं किन्तु देवी के पैदा होने पर घर में मातम छा जाता है। कार्यक्रम के अन्त में शान्ति पाठ के उपरान्त सभी ने ऋषि लंगर में प्रशाद ग्रहण किया।

लड़कियों की संख्या में गिरावट हमारी कलुषित मानसिकता का प्रतीक है

♦आशा सौन (कवयित्री)

नवरात्रों में बड़ी श्रद्धा से कन्या पूजन, दूसरी ओर उसकी गर्भ में बढ़ती हत्यायें! इस विरोधाभास व विडम्बना के मध्य जी रहा भारतीय समाज आज के वैज्ञानिक युग में भी अन्धविश्वास व पुत्रमोह से बुरी तरह ग्रसित है। उत्तराखण्ड में बेटियों की संख्या में गिरावट चिन्ताजनक स्थिति में पहुँच गई है। राष्ट्रीय बालिका दिवस, २४ जनवरी को चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के आंकड़ों के अनुसार यहाँ १ हजार लड़कों पर मात्र ८६६ बेटियाँ रह गई हैं, हम सब चुप!

पिथौरागढ़ में "बेटी बचाओ" अभियान चला रहे सामाजिक कार्यकर्त्ता डॉ. तारा सिंह से मेरी अनेक बार भेंट हुई तथा उनके साथ इस अभियान में जाने का मौका मिला तो बड़े कड़वे अनुभव भी हुये हैं। यह बात समझ से बाहर है लोगों की सोच अपनी बेटी के प्रति इतनी हिंसक क्यों होती जा रही है। यहां की मीडिया ने तारा सिंह की बात घर–घर पहुंचाई लेकिन मंजिल अभी कठिन तो है ही।

डॉ. तारा सिंह ने बताया कि सीमान्त पिथौरागढ़ कन्या भ्रूण हत्या के मामले में देश का सबसे संवेदनशील जनपद हो गया है। यहां बेटियाँ घटकर ७६६:१००० आ गई हैं यानि विगत १२ वर्षों में १३६ बेटियां घटी है। उनका मानना है यदि बेटी को इसी तरह जन्म से रोका गया तो आगे भारी सामाजिक समस्यायें खड़ी हो जायेंगी। यहाँ के १४ इंटर कॉलिजों के अतिरिक्त उन्होंने दर्जनों गांवों में घूमकर भ्रूण हत्या के विरुद्ध एक वातावरण बनाने का प्रयास अवश्य किया है।

सन् २०११ की जनगणना के आंकड़े देते हुए डॉ. तारा सिंह ने कहा कि नैनीताल ८६१, चम्फावत ८६० बागेश्वर ६०१, तथा शिक्षा व संस्कृति का केन्द्र अल्मोड़ा ६२१, बेटियाँ प्रति हजार लड़कों पर आंकी गई हैं। प्रदेश की राजधानी देहरादून ८६०, टिहरीगढ़वाल ८८८, रूद्र प्रयाग ८६६, की स्थिति चिन्ताजनक है। उत्तरकाशी ६५६ तथा हरिद्वार में पहले की अपेक्षा कुछ सुधार के बाद ८६६ बेटियाँ आंकी गई हैं जो एक शुभ संकेत है।

डॉ. तारा सिंह कन्या भ्रूण हत्या जागरूकता अभियान के अतिरिक्त विभिन्न समाचार पत्रों में लेख भी लिखते आ रहे हैं। वे लोगों को समझा रहे हैं कि पड़ोसी नेपाल १०१४, म्यांमार १०४८, श्रीलंका १०३४, बांग्लादेश ६७८ में महिला जनसंख्या पहले की अपेक्षा बढ़ी है। दुर्भाग्य 'यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' का संदेश देने वाले भारत में ही लड़कियों की संख्या में' गिरावट आना हमारी कलुषित मानसिकता का प्रतीक है।

डॉ. तारा सिंह का सुझाव है कि विवाह संस्कार में सात वचनों के पश्चात् ८वां वचन नव दंपत्ति से कन्या भ्रूण हत्या से सदैव दूर रहने एवं बेटी के जन्म की तरह प्रसन्नता व्यक्त करने का भरवाना चाहिए। आर्य समाज से इस सम्बन्ध में उन्हें रचनात्मक कदम की उम्मीद है। बेटी की हत्या का महापाप करने वालों से डॉ. तारा सिंह पूछते है कि क्या बेटी बिना बेटे का जन्म संभव है ? डॉ. स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी का आशीर्वाद व मागदर्शन उन्हें इस पुनीत कार्य में प्राप्त है।

thearyasamaj.org

वैदिक विवाह निम्नताओं से खींचकर एकता की ओर ले जाते है

♦सूरजमल त्यागी, कोटा, राजस्थान

हिन्दू विवाहसंस्था में सुधारवादियों द्वारा इसमें व्याप्त रूढ़ियों, आडम्बरों, अवैज्ञानिक, अशास्त्रीय, झँझटों से मुक्त किया है। विवाह को धार्मिक कर्त्तव्य की अनिवार्यता, पितृऋण, देवऋण, ऋषिऋण से मुक्ति, वंशावली की वृद्धि के लिए अनिवार्य माना गया है। विवाह में गोत्र, जाति, प्रवर, पिण्ड की सुरक्षा का विधिवत् ध्यान रखा जाता है। संयुक्त परिवार में विवाहित को आर्थिक समस्या नहीं थी। अविवाहित रहने को धर्महीनता ही समझा जाता था।

आज विवाहसंस्था का स्वरूप बदल रहा है। नव युवक जब तक अपने पैरों पर खड़ा नहीं होता, तब तक वह अपने लिये विवाह का शब्द सुनता भी नहीं। वर्तमान शिक्षा–दीक्षा में ऐसा कोई प्रावधान नहीं "सत्यं वद्, धर्म चर" जैसे सूत्र शिक्षा से गायब हो गये। जीवन और शिक्षा का उद्देश्य धनोपार्जन के लिये एक मँहगा मजदूर बनना है। विवाह के आधार–भूत तत्वों को भुलाकर, प्रेम विवाह की ओर दौड़ता है और विवाह स्मृतिकारों के कानून, विधि–विधान को अस्वीकार कर देता है। उसे स्वछन्द–प्रेम की आजादी अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। तब जाति–गोत्र–धर्म–प्रर्वर भी, प्रेम विवाह के सन्मुख तिनके की तरह हवा में उड़ जाते हैं। माता–पिता असहाय, मजबूर, दिल मसोस कर ठगे से रह जाते हैं।

प्रेम विवाह का आधारभूत तत्व, एक भावनात्मक उन्माद है। असीमित उन्माद में तड़पता–छटपटाता नवयुवक अपने स्व को भूल जाता है। हनीमून के बाद ही, प्रेम के इस उन्माद का नशा ढलने लगता है।

कंचन काया में तो हाड़–मांस–मल–मूत्र भी भरा है। तब स्वभाव की भिन्नता तथा सद्भाव, सद्व्यवहार की हीनता से प्रेम उन्माद के घने–गहरे बादल, वर्षा से पूर्व ही छिन्न–भिन्न होने लगते हैं। प्रेम पाठ की मुहारनी का पढ़ना रुक जाता है। प्रेम उन्माद का नशा जो पानी के पम्प द्वारा सातवीं मंजिल के शिखर तक चढ़ा था वह भावनात्मक आलम्बन के खिसकने पर पाइप के द्वारा गंदी नाली और गटर तक आ गिरता है। पहले एक–दूसरे बिना रहना कठिन था अब एक साथ रहना असम्भव लगता है। समाधान होता है, भागें या भगायें, आत्म हत्या, जेल की कोठरी, तलाक, पर पूर्ण विश्राम लग जाता है। वास्तव में प्रेम विवाह, तो विवाह के अर्थ को खो चुका है।

दाम्पत्य–विवाह और प्रेम–विवाह में मौलिक अन्तर है। दाम्पत्य–विवाह में ऋषियों ने, श्रेष्ठ–गौरवमयी सामाजिक रचना का नैसर्गिक विधान किया है। दाम्पत्य विवाह को आत्मिक प्रेम का केन्द्र मान कर अपने से निकल कर, दूसरे में झलकने लगता है, स्वार्थ का अंश पर्दे के पीछे–हटने लगता है। इस में प्रेम का उन्माद नहीं, अपितु विशेष दायित्व के वहन करने के संकल्प का गाम्भीर्य भरा होता है। "जो मेरा हृदय है, वह अब तेरा है" , "तेरा हृदय मेरा है।" एक दूसरे में सखाभाव खोजते ही स्वाभाविक प्रेम, पति–पत्नी में हिलोरें मारने लगता है। दो को बाँधने के लिए गठबंधन करते हैं। इस गठबंधन की गांठ में हल्दी की गांठ, अक्षत, सरसों रख कर गाँठ बाँधी जाती है। जो सौभाग्य की प्राप्ति, अखण्डित, स्नेह का इतना गहरा संकल्प होता है। शिला रोहण, सप्तपदी, यज्ञाग्नि की प्रदक्षिणा तो जीवन संहिता की वसीयत अभिलेख पर मोहर (सील) लगाने जैसी, भीष्म प्रतिज्ञा होती है।

पति–पत्नी हाड़–माँस की देह नहीं होते। प्रेम के लिए किसी पाठशाला में नहीं जाना पड़ता। सन्तान प्राप्त होते ही, एक प्राकृतिक–ईश्वरीय पाठशाला से शिक्षा प्राप्त करने लगते हैं। ऐसी शिक्षा–बच्चा कहीं जाग न जाय! बच्चे को कहीं सर्दी न लग जाय। बीमार होने पर दोनों रात–रात भर जागते हैं!!! दुनिया भर के बच्चों में अपने बच्चे की झलक देखने लगते हैं। वैदिक विवाह मनुष्य को भिन्नताओं से खींचकर एकता के संगठन की ओर ले जाता है। वेद का निर्देश है कि "पर्तियो यज्ञ संयोगे" "पत्नी यज्ञ संयात" (यजुर्वेद) यज्ञ से पति–पत्नी बनते हैं। यज्ञ से ही पति–पत्नी के प्रेम का उद्वेग शुरू होता है। पत्नी उसी को कहते हैं, जो पति से संयुक्त होकर ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ को सम्पादित करती है।

अतः प्रेम विवाह, भारतीय संस्कृति की अवधारणा नहीं है। पाश्चात्य–सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा का दुष्प्रभाव, नवयुवक–युवतियों को भोग विलास के गर्त में धकेल रहा है। इससे भारतीय विवाह संस्था विघटित हो रही है। जिसके कितने दुष्परिणाम सर्वत्र प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं। इस भंयकर प्रकोप से सुरक्षा के उपाय करने ही होंगे। "पेट भरो! आराम करो!! ऐश करो!!! यह प्रेम विवाह की सोच है। हमें काम, क्रोध, लोभ, रागद्वेष के प्रबल शत्रुओं को पराजित करने वाला पुत्र प्राप्त हो। यह वैदिक विवाह का दर्शन। विवाह दोनों में है। एक बन्धन नीचे गिरने के लिये, दूसरा बन्धन ऊपर चढ़ने के लिए होता है। दोनों के परिणाम पृथक्–पृथक हैं।"

thearyasamaj.org

प्रेरक प्रश्नोत्तर

♦खुशहाल चन्द आर्य, कोलकता

१. प्रश्न : ईश्वर साकार है, वा निराकार ?

उत्तर : निराकार। क्योंकि जो साकार होता तो व्यापक नहीं हो सकता। जब व्यापक न होता तो सर्वज्ञादि गुण भी ईश्वर में न घट सकते क्योंकि परिमित वस्तु में गुण–कर्म–स्वभाव भी परिमित रहते हैं तथा शीतोष्ण, क्षुधा, तृषा और रोग, दोष, छेदन, भेदन आदि से रहित नहीं हो सकता। इससे यही निश्चित है कि ईश्वर निराकार है। जो साकार हो तो उसके नाक, कान, आंख आदि अवयवों का बनाने वाला कोई दूसरा होना चाहिए। क्योंकि जो संयोग से उत्पन्न होता है, उसको संयुक्त करने वाला निराकार चेतन अवश्य होना चाहिये। जो कोई यहाँ ऐसा कहे कि ईश्वर ने स्वेच्छा से, आप से आप ही अपना शरीर बना लिया तो भी वही सिद्ध हुआ कि शरीर बनाने के पूर्व निराकार था। इसलिये परमात्मा कभी शरीर धारण नहीं करता, किन्तु निराकार होने से सब जगत् को सूक्ष्म कारणों से स्थूलाकार बना देता है।

२. प्रश्न : ईश्वर अवतार लेता है, वा नहीं ?

उत्तर : नहीं! क्योंकि "अज एक पात्। सपर्य्यगाच्छुक्रमकायम्" ये यजुर्वेद (३४/५३ और ४०/८) के वचन हैं। इत्यादि

प्रश्न : यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमर्धस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्।। भ. गी. ४१/६/

श्री कृष्ण जी कहते हैं कि जब–जब धर्म का लोप होता है तब–तब में शरीर धारण करता हूँ।

उत्तर : यह बात वेद विरूद्ध होने से प्रमाण नहीं। हाँ! ऐसा हो सकता है कि श्री कृष्ण धर्मात्मा थे और धर्म की रक्षा करना चाहते थे कि मैं युग–युग में जन्म लेके श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूं तो कुछ दोष नहीं। क्योंकि "परोपकराय सतां विभूतयः" परोपकार के लिये सत्पुरुषों का तन, मन, धन होता है, तथापि इससे श्री कृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।

३. प्रश्न : जीव स्वतन्त्र, वा परतन्त्र ?

उत्तर : अपने कर्त्तव्यों कर्मों में स्वतन्त्र और ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है।

प्रश्न : स्वतन्त्र किसको कहते हैं ?

उत्तर : जिसके अधीन शरीर, प्राण, इन्द्रिय और अन्तकरणादि हों। जो स्वतन्त्र न हो तो उसको पाप–पुण्य का फल प्राप्त कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जैसे भृत्य स्थायी और सेना, सेनाध्यक्ष को आज्ञा अथवा प्रेरणा से युद्ध में अनेक पुरुषों को मार के भी अपराधी नहीं होते, वैसे ही परमेश्वर की प्रेरणा और अधीनता से काम सिद्ध हो तो जीव को पाप वा पुण्य न लगे। इस फल का भागी प्रेरक परमेश्वर होवे। स्वर्ग–नरक अर्थात् सुख–दुःख की प्राप्ति भी परमेश्वर को होवे। जैसे किसी मनुष्य ने शस्त्रविशेष से किसी को मार डाला तो वही मारने वाला पकड़ा जाता है और वही दण्ड पाता है, शस्त्र नहीं। वैसे ही पराधीन जीव पाप–पुण्य का भागी नहीं हो सकता। इसलिये अपने सामर्थ्यानुकल कर्म करने में जीव स्वतन्त्र, परन्तु जब वह पाप कर चुकता है तब ईश्वर की व्यवस्था में पराधीन होकर पाप केवल भोगता है। इसलिये कर्म करने में जीव स्वतन्त्र और पाप के दुःख रूप फल भोगने में परतन्त्र होता है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्वदेशी के प्रतीक

♦कृष्ण मोहन गोयल

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपनी वकालत की शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त पूज्य बापू के आर्दशों से प्रभावित होकर स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भूमिका हेतु वर्धा आश्रम में आकर रहने लगे।

वह गांधी जी के पास शिष्यों में प्रमुख थे। एक दिवस गौ–रक्षा सम्मेलन के कार्यकर्त्ता पूज्य बापू के पास सम्मेलन भी अध्यक्षता का निमन्त्रण लेकर आए। गांधी जी इस दिन अन्यत्र व्यस्त थे इसलिए गांधी जी ने गौ रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए राजेन्द्र बाबू का नाम तय किया।

राजेन्द्र बाबू ने गौ–रक्षा सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं से तीन दिन बाद सम्पर्क करने को कहा। गाँधी जी ने राजेन्द्र बाबू से इस कारण को स्पष्ट करने को कहा। तो राजेन्द्र बाबू बोले कि गौ–रक्षा का व्रत लेने से पूर्व में कर्म और मन से उस व्रत हेतु दृढ़ संकल्प हो जाऊँगा।

तीन दिन बाद जब गौ–रक्षा सम्मेलन के कार्यकर्त्ता राजेन्द्र बाबू के पास आए तो वह उनको देखकर भौचक्के रह गए। राजेन्द्र बाबू का परिधान पूर्ण तथा स्वदेशी था और उन्होंने चमड़े के जूतों के स्थान पर कपड़े के जूते पहन रखे थे। उनके परिधान में अब चमड़े की कोई भी वस्तु नहीं थी।

राजेन्द्र बाबू जब राष्ट्रपति भवन में रहने गए तो वहाँ भी उन्होंने अपने निवास में स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया। गाय की सेवा उनका दैनिक कार्यक्रम था तथा गाय के दूध से बने आहार ही वह अपने भोजन में ग्रहण करते थे। राष्ट्रपति पद पर रहते हुए उन्होंने गाँधी चरखा का प्रयोग अवश्य किया। साथ–ही–साथ जीवन पर्यंत यथा संभव हाथ से कते सूत्र से निर्मित परिधान को ही धारण किया। विदेशी यात्रा के दौरान भी वह स्वदेशी को प्राथमिकता प्रदान करते थे। विदेशी मेहमान भी इस स्वदेसी पसन्द की भूरि–भूरि प्रशंसा करते थे। राजेन्द्र बाबू सदैव भारतीय भाषा हिन्दी में वार्त्तालाप करना पसन्द करते थे शत–शत नमन।

thearyasamaj.org

प्राचीन कालीन कवि महात्मा तुलसी दास ने लिखा है : –

कलिमल हरे धर्म सव लुप्त भये सद ग्रंथ,
दम्भिनी निज मत कथा करी प्रगट किया बहु पंथ।

आज जो भी दो अक्षरों का ज्ञान अपनी झोली में डाल लेता है वो ही अपने आपको चमत्कारी, त्यागी और संत कहलाने लगता है। वास्तव में इस प्रकार के पाखण्डी, दंभी और चमत्कारी महात्माओं के तम्बुओं को माचिस की एक तिली भी भस्म साथ कर दे कुछ कहा नहीं जा सकता। आज हरियाणा के हिसार जिले के दुःखांत सतलोक आश्रम के स्वयम्भू संत बाबा रामपाल की कहानी हमारे सामने मुंह बोलती तस्वीर है जो सिर से पैर तक अभाव, अन्धकार और अत्याचार के ऊपर खड़ी है। महात्मा जी आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के घोर विरोधी हैं। वे महर्षि दयानन्द के इन तर्कों के घोर विरोधी हैं जिसमें देव दयानन्द ने तर्कों, प्रमाणों और युक्तियों से संत कबीर दास को एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ माना था। जिसने लोक लाज के कारण इस बच्चे को काशी के लहर तारा नामक तालाब में फैंक दिया था। निमा और नीरू जुलाह दम्पति ने इस बच्चे को पाल पोस कर बड़ा किया।

ऋषि दयानन्द के तर्क उल्टी बुद्धि के बाबा रामपाल जी का तर्कहीन और तत्थहीन लगते थे जिसमें उनके पाखण्डों और अन्धविश्वासों के तम्बू उखड़ते हुए दिखाई देते थे। वे तो कबीरदास को साक्षात् ईश्वर ही समझते थे और उन्हें माता के गर्भ से उत्पन्न होने की बात को थोथी और तर्कहीन तथ्यहीन मानते थे। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द सरस्वती का तर्क था कि सृष्टि के सब प्राणी माता के गर्भ से हुए हैं चाहे वो शंकराचार्य, योगी या भक्त हों। सभी उस निराकार प्रभु की ज्योति से सम्पन्न हैं। लेकिन उल्टी बुद्धि वाले बाबा रामपाल बस अपने को ही साक्षात् ईश्वर का रूप मान बैठे थे और उनके आश्रम में प्रतिदिन सेविकाएं दूध से नहलाती थी और उस दूध की खीर तैयार की जाती थी जो सभी भक्तों को प्रसाद रूप में दी जाती थी। सभी भक्ति से बाबा की कृपा समझकर स्वीकार करते थे। इस दम्भी, छली और कपटी बाबा को आखिरकार जेल की सलाखों के पीछे जाना ही पड़ा। इससे पंद्रह हजार से अधिक शिष्य और शिष्याएं भी इसे जेल जाने से न बचा सकीं। पुलिस ने जब बाबा जी के आश्रम का निरीक्षण किया तब उन्हें चौकानें वाले तथ्य दिखाई दिए जिससे मालूम होता है कि ऋषिवर दयानन्द को छलित करने वाला यह कपटी था। अब पुलिस ने अनेकों आरोपों में इस महात्मा को जेल में रखा हुआ है। आसाराम बापू की तरह ही अब इसके भविष्य का फैसला कानून के मजबूत हाथों से ही होगा। इस दम्भी महात्मा पर हत्या, डकैती और व्यभिचार जैसे अनेकों आरोप लगे हैं। पुलिस द्वारा हॉस्पिटल में बाबा के चिकित्सा जांच करवाने के बाद यह पाया कि यह संत पूर्ण रूप से स्वस्थ्य है। इसे कोई व्याधि नहीं लगी है। भविष्य ही अब बाबा के कारनामों का कच्चा चिठ्ठा प्रस्तुत करेगा।

रामपाल आतंकवादी व चरित्रहीन है।

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, यमुनानगर (हरियाणा)

यमुनानगर "सन्तरामपाल एक आतंकवादी चहित्रहीन व देशद्रोही है"–ये शब्द वैदिक मिशनरी पं. इन्द्रजित्देव ने अपने एक वक्तव्य में कहे हैं। रामपाल के ही एक शिष्य सन्त कृष्णादास की पुस्तक "शैतान बसाया भगवा" का प्रमाण देकर कहा कि रामपाल के आश्रम में चरित्रहीनता का खेल खेला जाता रहा है। सन् २००६ में जब उसके आश्रम से चली गोलियों से सोनू नामक एक आर्यवीर शहीद हुआ था व पुलिस ने आश्रम की तलाशी ली थी तो ६३ लड़कियों के फोन नम्बर, अनेक मंगलसूत्र, अन्य अश्लीलता का सामान व हथियार मिले थे। अब बरवाला आश्रम से पकड़े जाने पर यह शर्त लगाना कि मुझे पकड़ने के बाद मेरे आश्रम की तलाशी न ली जाए, यह सिद्ध करता है कि वह दूसरा भिंडरावाला है, देशद्रोही है व उसका आश्रम चरित्रहीनता को बढ़ावा देने वाला है। पं. जी ने आगे कहा कि उसे संस्कृत तो क्या हिन्दी भी ठीक प्रकार से लिखनी नहीं आती और वह कई सम्प्रदायों के विरूद्ध अनर्गल व असत्य बातें कहता रहा है परन्तु सिखों व आर्य समाजियों के अतिरिक्त किसी ने उसे रोका टोका नहीं है। सन् २००४ में ७ जुलाई, को आर्य समाज यमुनानगर के विद्वान् ने उसे जब शास्त्रार्थ के लिए ललकारा था तो वह बाहर ही नहीं आया था। ८ जुलाई, २००४ को पं. इन्द्रजित देव, आचार्य राज किशोर, आर्य केशवदास, आर्य सुखदेव आचार्य आदि आर्यों व अजिंद्रपाल सिंह तथा राजविन्द्र सिंह आदि सिखों ने मिलकर उसे शास्त्रार्थ करने हेतु बाहर आने को कहा था परन्तु वह कायर व अज्ञानी निकला और रात को भाग गया। सन् २००६ में भी करौंथा के निकटवर्ती ग्रामों के आर्यों ने आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में उसकी धर्म विरोधी गतिविधियों के विरोध में जुलूस निकाला तो उसने गोलियों से सोनूं नामक आर्यवीर को शहीद कर दिया। सन् २०१३ में भी एक आर्य देवी व दो आर्य युवकों ने अपने प्राण न्यौछावर किए है। रामपाल यदि सत्यावादी है तो वह कायर बनकर आश्रम में क्यों छिपा रहा ? पं. इन्द्र देव ने कहा है कि मतभेद को बातचीत शास्त्रार्थ से हल किया जा सकता है किन्तु बन्दूकों व बमों से कोई समस्या हल नहीं होती। आर्य समाज धर्म व सत्य की रक्षार्थ पहले भी कई बलिदान दे चुका है व वेद, सत्यार्थ प्रकाश व दयानन्द के सिद्धांतों के प्रचारार्थ ही यह विरोध किया था और करता रहेगा।

thearyasamaj.org

सर्वव्यापक उपास्य

♦रामगोपाल गर्ग, आदर्श नगर, अजमेर

उपासना काल में ईश्वर को व्यापक और अन्य पदार्थों को व्याप्य मानकर उपासना करनां एक बहुत बड़ा साधन है, और उससे हमको सफलता मिलती है। ईश्वर को सीधा सम्बोधन करते हुए कहते हैं–ईश्वर! आप को कोई रुकावट नहीं है। हम जीवात्माएँ जहाँ विद्यमान है, वहाँ आप ईश्वर भी हैं और जहाँ जीवात्माएँ नहीं हैं, वहाँ भी आप विद्यमान हैं। जहाँ प्रकृति–सत्त्व–रज–तम है, वहाँ भी आप विद्यमान हैं और जहाँ नहीं है, वहाँ भी विद्यमान हैं। इतना ही नहीं, प्रलयावस्था में जब यह सृष्टि नहीं थी, उस समय भी आप इसी प्रकार से व्यापक थे। आज सृष्टि रचना होने पर भी इसी प्रकार से आप व्यापक हैं। आगे प्रलय होगा, तब भी इसी प्रकार व्यापक रहेंगे। अतः तीन काल में मैं आपसे बाहर तो जा ही नहीं सकता। कहाँ जाऊँ ? कहीं नहीं जा सकता। तो चुपचाप आपके साथ बैठकर आपकी उपासना क्यों नहीं करूँ ?

तो चुपचाप ईश्वर के पास बैठते क्यों नहीं ? क्या कोई उलझन है ? उलझन तो संस्कारों के कारण है। संस्कार तो पैदा किए थे, और जो वस्तु उत्पन्न की जा सकती है, उसे मारा भी जा सकता है। यह उसका नियम है। ऐसी अद्‌भुत बड़ी विचित्र अवस्था है। कोई भी जीवात्मा, सत्त्व–रज–तम का एक कण भी ईश्वर से बाहर नहीं था, न है और न होगा। परन्तु इतना होते हुए भी ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति न एक थे, न एक हैं और न होंगे। यह नियम है। व्यापक और व्याप्य का परिज्ञान करके जब हम ईश्वर की उपासना करते हैं तो जो बहुत बड़ी उलझनें, वृत्तियाँ, विविध बाधाएँ खड़ी होती हैं, उनका समाधान कर लेते हैं। जैसे कि कोई बाधा उपस्थित हुई, वृत्तियाँ आ गईं, तो हम झट ईश्वर के पास जाकर खड़े हो गए और कहने लगे कि हे ईश्वर! आप सब जगह व्यापक हैं। यहाँ भी है, वहाँ भी हैं। सब जगह जब आप ईश्वर विद्यमान हैं, तो उससे अन्यत्र वृत्तियाँ कहाँ फैलेंगी ?

पुनः उसने ज्ञान कर लिया कि मन को चलाता तो मैं ही हूँ। यह ज्ञान उसकी बुद्धि में हो गया, अब वह नहीं चलाएगा। नहीं तो क्या होता है कि ईश्वर के पास में जाकर खड़े होकर भी मन को स्वयं चला देता है और पुनः उपालम्भ देता (शिकायत करता) है कि भगवान्! मन नहीं मानता। जब उसको पता चल गया कि मन अन्य विषय में चला गया, मन में विचार आ गया, यह मान्यता ठीक नहीं है, तो अब नहीं चलाता है। जब दृढ़ निश्चय हो जाता है, तब विचार आ ही नहीं सकते।

साधक जब ईश्वर या आत्मा के विषय में कोई संशय उठा लेता है, तब बार–बार सोचता है कि संशय अपने आप उठ गया कि मन–इन्द्रियों ने उठाया है ? उसने यदि वास्तव में यह जाना, समझा कि संशय उठाने वाला मैं ही हूँ, तब वह यहाँ पर पहुँचेगा कि संशय मैंने उठाया है, और यह मेरा दोष है। मैंने इसे क्यों उठाया ? अब नहीं उठाऊँगा। ऐसे उसने हटा दिया, तब ईश्वर या आत्मा के प्रति जो संशय था, वह दूर हो गया, ज्ञान हो गया। पूर्ववत् ईश्वर के प्रति विश्वास उत्पन्न हो गया।

सन्यासी पानी-पानी हो गया

♦कृष्ण मोहन गोयल, ११३, बाजार कोट, अमरोहा

एक दिवस स्वामी दयानन्द पीतल की थाली में भोजन कर रहे थे। एक धूर्त सन्यासी ने स्वामी जी को टोकते हुए कहा कि सन्यासियों को धातू का स्पर्श वर्जित है।

स्वामी जी निश्चिंत होकर भोजन करते रहे। जैसे कि उन्होंने कुछ सुना ही नहीं ! भोजन के उपरांत यह सन्यासी से बोले कि भोजन पाकर आनन्द आ गया। आपने कभी धातु का स्पर्श नहीं किया। सन्यासी बोले कि राम–राम, शिव–शिव ! धातु का स्पर्श और सन्यासी ? धातु का स्पर्श करने से पूर्व सन्यासी को शिव धाम जाना ही उचित है।

यह सुनते ही स्वामी दयानन्द जी के चेहरे पर व्यंगयात्मक मुस्कान फैल गई। स्वामी जी ने सन्यासी से पूछा कि सिर के बाल साफ करने के लिए आप क्या बगैर धातु के उस्तरों का प्रयोग करते हैं। वह उस्तरा मुझ को भी दिखाओ। क्योंकि आप धातु के उस्तरों का प्रयोग तो कर नहीं सकते।

स्वामी जी के इस हास–परिहास और व्यंग्यात्मक जबाब को सुनकर सन्यासी पानी–पानी हो गया।

ऋषि-सन्देश

१. जो अपने कार्य में आनन्द का अनुभव करता हैं उसे विश्राम की आवश्यकता नहीं।
२. अन्तःकरण की शुद्धि के लिये यज्ञ करना चाहिये।
३. अंहकार रूपी चश्मा उतारने पर प्रभु के दर्शन होते हैं।
४. सच्चा योगी वह है जिसने काम, क्रोध के वेग को जीत लिया।
५. जो दूसरों को कुछ दिये बिना उनसे लेने की इच्छा करता है, वह अपराधी है।
६. शरीर जड़ है, आत्मा चेतन है, परमात्मा परमचेतन है।
७. प्रसन्नता व मुस्कराहट से युक्त सेवा ही वास्तविक सेवा है।
८. अतिशय सुख भगवान से विमुख करता है।
९. गोवर्धन ही विश्व का वर्धन है। गो पतन विश्व का पतन है।
१०. विश्व को एक सूत्र में बांधने के लिये यज्ञ, सत्संग और धार्मिक स्थल महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

thearyasamaj.org

समाचार

श्री सोहन लाल गुप्ता उन महान् विभूतियों में से हैं जो रात दिन सेवाकार्यों में समर्पित रहते हैं। वे अति लम्बे समय से सुन्दरनगर शमशान भूमि के निर्माण हेतु कार्य करते रहे हैं। यह उन्हीं के परिश्रम का परिणाम है कि आज सुन्दरनगर की शमशान भूमि भी मृतकों के दाह संस्कार के लिए पर्याप्त लकडियों का स्टोर उपलब्ध है। हमने तो चार–चार शवों को जलते हुए देखा। जो श्री सोहन लाल गुप्ता जी के प्रयत्नों को प्रतिविम्बित करता है। वे काफी लम्बे समय से प्रतिदिन शमशान भूमि में तीन–चार चक्कर लगाते रहे हैं। आजकल वे कई वार अवसाद में चले जाते हैं। मैंने उनसे इस सम्बन्ध में उन्हें इस अवसाद से मुक्त होने का परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि कोई मन्दिर का निर्माण कराता है तो कोई मस्जिद का, कोई गुरूद्वारे का तो कोई चर्च का, इन सब में आप वधाई के पात्र हैं जो अन्तिम यात्रा के स्थान में जाने से जहां लोक भयभीत होते हैं लेकिन वह जीवन का परम और चर्म सत्य है जिसे नकारा नहीं जा सकता। इस सृष्टि को चले हुए १ अरब ६६ करोड आठ लाख ५३ हजार ११५ वर्ष हो चुके हैं और असंख्य प्राणी इस विश्व रंगमंच पर आते जाते रहे हैं। तो इस में भयभीत और निराश होने का कोई कारण समझ नहीं आता। गुप्ता जी ने मेरी बातों को ध्यान से सुना और अवसाद दूर करने के सम्बन्ध में मुझे पूर्ण आश्वासन दिया। उनके इस सेवा कार्य में उनकी धर्मपत्नी का विशेष योगदान है। कोई पत्नी ऐसा नहीं चाहती कि उसका पति दिन में चार बार शमाशान भूमि जाकर निर्माण कार्य कराए लेकिन सोहन लाल गुप्ता जी की धर्मपत्नी उन गिनी चुनी महिलाओं में से एक है जो अपने पति की पीठ को ऐसे पुनीत कार्य करने के लिए बार–बार थपथपाती है। हमें ऐसी आदर्श महिलाओं पर गर्व है।

–कृष्ण चन्द आर्य

शोक समाचार

पुराना बाजार सुन्दरनगर स्थित व्यापार मंडल के पूर्व प्रधान तथा कांग्रेस के पूर्व नेता श्री सूद का गत् दिनों अचानक देहांत हो जाने से उनके सम्बन्धी एवं मित्रजनों में शोक की लहर दौड़ गई। श्री सूद की पत्नी पैंशनर कल्याण संघ सुन्दरनगर की सक्रिय सदस्य रही हैं। उनके पति के इस वियोग से आई रिक्तता को पूरा करना बड़ा दुर्लभ है। प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे और परिवारजनों को इस वियोग को सहने की शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करे।

क्या मांगू

परम पिता परमेश्वर से ध्यान अवस्था में होकर कुछ मांग कर भी मांगने का साहस नहीं कर पाती। मैं कण–कण में व्याप्त उस सत्ता से क्या मांग सकती हूँ।

- जब की वह सबके ह्रदय की बात को जानते हैं। उस की कृपा के पात्र तो हम तभी बन सकते हैं जब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार आदि शत्रु से हमारा साथ छूट जाए और बूरी बातों से नाता टूट कर उस प्रभु के चरणों में जुड़ जाए।
- अगर मुझ जैसी भक्त से प्रभु पूछें कि तुम क्या मांगना चाहती हो तो मेरा उत्तर केवल मात्र एक ही होगा कि हे जगत् जननी माँ मैं तूझ से केवल तुमको मांगना चाहती हूँ, अर्थात् आप की कृपा का हाथ सदा व सर्वदा मेरे और मेरे परिवार के ऊपर और मानव मात्र के ऊपर बना रहे ताकि हम आपकी शीतल छाया में बैठकर के आनन्द अनुभूति प्राप्त कर सकें। प्रभु तुम हमें सद्बुद्धि दो जिससे हम सत्य पथ के पथिक बने रहें और आप का दामन जीवन के अन्तिम समय तक पकड़कर शुभ कार्य करते रहें।
- पाखण्ड, अधर्म, अन्याय और अत्याचार आदि अवगुण हमारे जीवन में प्रवेश न कर पायें, किसी का भी मन वचन और कर्म से अहित चिन्तन ना करें, हे प्रभु आपका वरदहस्त सदा और सर्वदा मेरे ऊपर बना रहे जिससे मैं दीन–दुखियों और पीड़ितों के आंसू पोंछ कर मानवता की सेवा कर सकूं।

–सरला गौड, दयानन्द मार्ग, सुन्दरनगर

संघ समाचार

दिनांक २६ अक्तूबर, २०१४ को बल्ह खण्ड प्रधान मंगत राम चौधरी की अध्यक्षता में कार्य कारिणी की बैठक हुई जिसमें निम्न प्रस्ताव पारित किये गये : (१) ६५, ७०, ७५ वर्ष पार करने पर सरकार ने जो भत्ता ५, १०, १५ प्रतिशत दिया है उसे मूल पैंशन में शामिल किया जाये। (२) चिकित्सा भत्ता ३५० रू. के स्थान पर ५०० रू. पंजाब मूल वेतन मान के आधार पर अविलम्ब दिया जाये। (३) पांच विश्वा जमीन पैंशनर भवन बनाने के लिये डडौर पंचायत पटवार सर्कल में तुरन्त स्वीकृत की जाये। (४) वरीयता के आधार पर वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य की जांच की जाये। उनका ईलाज प्राथमिकता के आधार हो। बैठक में प्रधान मंगतराम चौधरी, सचिव जयराम नायक, कोषाध्यक्ष ललित कुमार, जिला प्रधान कृष्ण चन्द आर्य, महासचिव भगतराम आजाद, उपाध्यक्ष लालमन शर्मा, प्रचार मन्त्री माया राम शर्मा, जिला सलाहकार खेम चन्द ठाकुर, रघुराम, राम किशन, लुद्दर शर्मा, प्रेमदास, परमदेव, चन्दूलाल, चेतराम भी उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

संघ समाचार

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ की प्रदेश स्तरीय बैठक दिनांक १० नवम्बर २०१४ को प्रातः ११ बजे जिला कुल्लू के बंजार में प्रदेशाध्यक्ष श्री रमेश भारद्वाज की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में श्री बी. डी. शर्मा, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष तथा मुख्य संरक्षक मुख्य अतिथि थे। प्रदेश के महामन्त्री श्री प्रीतम भारती तथा श्री योग राज भी उपस्थित थे। कुल्लू जिला के प्रधान श्री प्रताप चौहान ने बाहर से पधारे सभी प्रतिनिधियों को कुल्लवी टोपी पहना कर सम्मानित किया। इस अवसर पर हिमाचल के जिलों से पधारे हुए जिलाध्यक्षों ने हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ से निष्काषित व्यक्तियों द्वारा समान्तर संघ का गठन करके प्रदेशाध्यक्ष श्री रमेश भारद्वाज, मुख्य संरक्षक श्री बी. डी. शर्मा, जिला मण्डी के प्रधान श्री कृष्ण चंद आर्य तथा कुल्लू जिला के प्रधान श्री प्रताप चौहान को निष्काषित करने की कार्यवाही को अत्यन्त घटिया और अनुचित कहा। उन्होंने यह भी कहा कि जिन व्यक्तियों को २० सितम्बर २०१३ को सुन्दरनगर में हुए प्रदेश स्तरीय चुनाव के उपरांत संघ की प्रारम्भिक सदस्यता से निष्काषित कर दिया गया है वे किस हैसियत से उनसे त्याग पत्र मांग रहे हैं। उन्होंने ऐसे शरारती तत्वों से सावधान रहने हेतु सभी जिला के पैंशनरों से प्रार्थना की। इस अवसर पर प्रदेश प्रधान श्री रमेश भारद्वाज ने १८ दिसम्बर २०१४ को पैंशनर दिवस ऊना में मनाने का अनुरोध किया जिसे सभी उपस्थित समूह ने स्वीकार कर लिया। प्रदेशाध्यक्ष श्री रमेश भारद्वाज ने यह भी कहा कि प्रदेश भर के सभी खंडों में सदस्यता अभियान प्रारम्भ कर दिया जाए ताकि सभी ब्लाकों और जिलों के चुनाव मई के अंत तक सम्पन्न हो जाएं। उन्होंने सभी पैंशनरों से बढ़चढ़ करे चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने का अनुरोध किया। प्रदेश के मुख्य संरक्षक श्री बी. डी. शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार बुजुर्ग पैंशनरों के हितों की अनदेखी न करें। उन्होंने कहा कि ६५, ७० और ७५ वर्ष की आयु के पैंशनरों को सरकार द्वारा ५, १० और १५ प्रतिशत मंहगाई भत्ता देकर सरकार ने अधूरा आदेश लागू किया है। क्योंकि ५, १० और १५ प्रतिशत की बढ़ौतरी को मूल पैंशन में शामिल करना अति आवश्यक है, अन्यथा सरकार के आदेशों का कोई अर्थ नहीं है। उन्होंने हर जिले में बुजुर्ग पैंशनरों के लिए भवन निर्माण हेतु ५ विस्वा भूमि की अनुमति देने का भी अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि करूणामूलक आधार पर पारिवारिक पैंशनरों के बच्चों को नौकरी पर लगाने के आदेश अति शीघ्र जारी किये जाएं और मुख्य रूप से पंजाब आधार पर पैंशनरों को सभी सुख सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएं। प्रदेश महामन्त्री श्री प्रीतम भारती, अतिरिक्त महामन्त्री श्री योगराज शर्मा, प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डा. अमरनाथ शर्मा तथा मंगत राम चौधरी ने भी अपने विचार रखे और संघ के सर्वांगीण विकास हेतु कार्य करने का आह्वान किया। महिलाओं की ओर से वरिष्ठ पैंशनर नेता तथा प्रदेश उपाध्यक्षा श्रीमती जावित्री देवी ने सभी पैंशनरों को शरारती तत्वों से सावधान रहने हेतु अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि यह अति दुर्भाग्यपूर्ण बात हैं कि कुछ स्वयंभू पैंशनर नेता बुजुर्ग पैंशनरों से अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए रिश्वत लेते रहे हैं जो अति दुर्भाग्य की बात है। जिला मण्डी के प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य ने दिवंगत नेता श्री एन. डी. ठाकुर तथा अन्य दिवंगत पैंशनरों के सम्मान में खड़े होकर दो मिनट का मौन करने का अनुरोध किया। इसके उपरांत उन्होंने सभी पैंशनरों को ५०० रूपये चिकित्सा भत्ता देने हेतु सरकार से अनुरोध किया और जिला कुल्लू के प्रधान श्री प्रताप चौहान तथा उनकी जिला कार्यकारिणी का अतिथि सम्मान करने हेतु उनका आभार व्यक्त किया। पैंशनर कल्याण संघ जिंदावाद के नारों के साथ सभा की कार्यवाही समाप्त हुई।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ के प्रदेशाध्यक्ष रमेश भारद्वाज, मुख्य सरंक्षक बी. डी. शर्मा तथा जिला मण्डी के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष कृष्ण चन्द आर्य और लालमन शर्मा ने एक संयुक्त वक्तव्य में हिमाचल सरकार से ६५, ७० और ७५ वर्ष की आयु के बुजुर्ग पैंशनरों को ५, १० और १५ प्रतिशत भत्ता देने के आदेश को अधूरा कहा है। उन्होंने सरकार से अनुरोध किया है कि वे इस राशि को पैंशनरों की मूल पैंशन में शामिल किया जाए ताकि पैंशनर सुख की सांस ले सकें। उन्होंने सरकार से ५०० रूपये प्रतिमास चिकित्सा भत्ता देने का भी अनुरोध किया। उन्होंने कहा है कि सरकार बुजुर्ग पैंशनरों को उनकी जीवन यात्रा समाप्त करने से पूर्व ही उनके सभी चिकित्सा बिलों को जो अल्मारियों में बंद पड़े हैं, अविलम्ब जारी करे।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ सुन्दरनगर के प्रैस सचिव श्री कलिया राम पंडयार, डैहर के साथ कुछ व्यक्तियों ने हाथापाई की जिससे उनके दिमाग पर चोट आई है और वे इन दिनों मानसिक और शारीरिक रूप से अस्वस्थ हैं। सरकार को अति शीघ्र इस सम्बन्ध में जांच करने की आवश्यकता है ताकि अवांछित तत्वों को सबक मिल सके।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ के वरिष्ठ सदस्य श्री सोम कृष्ण शर्मा गत् दिनों से अस्वस्थ चले आ रहे हैं। वे अपने सम्बन्धी डॉ. नन्द लाल का कुशल क्षेम पूछने प्रतिदिन उनके घर, जो रसमाई में स्थित है, जाते रहे हैं, उन्हें अचानक ही पक्षाघात हो जाने से वे गत् महीनों से अस्वस्थ चले आ रहे हैं, उन्होंने आर्य वन्दना हेतु ५०० रूपये की सहयोग राशि भी प्रदान की। आर्य वन्दना परिवार उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता है।

—कृष्ण चन्द आर्य

thearyasamaj.org

वेदों के बारे में जानें

♦स्वामी शान्तानंद सरस्वती

♦विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ वेद है। इससे पुराना और कोई भी ग्रंथ विश्व के किसी भी पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं।

♦वेदों का आविर्भाव सृष्टि के प्रारंभ में हुआ है।

♦वेद ज्ञान, सृष्टि के प्रारंभ में ईश्वर द्वारा अग्नि, वायु आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों को प्राणी मात्र के कल्याण के लिए दिया गया है।

♦वेद विद्या सृष्टि रचना के पूर्णतः अनुकूल है।

♦वेदों में समस्त सत्य विद्याओं का मूल विद्यमान है।

♦वेद ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल (अनुरूप) है।

♦वेद में वाक्य रचना बुद्धिपूर्वक व विज्ञानपूर्वक है।

♦वेद विद्या सर्वकालिक, सार्वभौमिक एवं सार्वजनिक है।

♦वेद विद्या तर्क, प्रमाण और युक्तियुक्त है तथा अकाट्य व अखंडनीय है।

♦वेद में कहीं भी परस्पर विरोधाभास नहीं है।

♦वेद में पाखंड, अंधविश्वास, इतिहास (किसी राजा या मनुष्य का) नहीं है।

♦वेद किसी एक देश विशेष की भाषा नहीं है। वेदों की भाषा वैदिक संस्कृति है जो लौकिक संस्कृति से कुछ भिन्न है।

♦वेद सृष्टि के आदि में अर्थात् १, ९६, ०८, ५३, ११३ वर्ष पूर्व जिस प्रकार प्रकट हुए थे उसी स्वरूप में बिना किसी परिवर्तन या परिवर्धन के आज भी उपलब्ध हैं।

♦दर्शन, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों, में वेद की महत्ता बताई गई है।

♦विश्व के ८० विश्वविद्यालयों में वेद पढ़ाया जाता है।

♦वेद स्वतः प्रमाण है। वेद को प्रमाणित करने के लिए किसी अन्य ग्रंथ के प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

♦वेदों में मनुष्य मात्र के जीवन व्यवहार को सुखमय ढंग से चलाने के लिए आवश्यक विधि–विधान विद्यमान है।

♦वेद के पढ़ने–पढ़ाने, सुनने–सुनाने से धर्म होता है तथा वेदानुसार आचरण करने से परम सुख मिलता है।

♦सम्पूर्ण वेद धर्म का मूल है अतः कहा गया है–वेदोऽखिलो धर्म मूलम्।

♦चारों वेदों की कुल १९२८ शाखाएं हैं जिनमें से वर्तमान १२ शाखाएं उपलब्ध होती हैं।

♦वेदों की व्याख्या करने वाले ग्रंथ ब्राह्मण ग्रंथ कहलाते हैं।

♦वेद को श्रुति, आम्नाय, निगम, ब्रह्म आदि नाम से भी जाना जाता है।

♦वेद पाठ के आठ प्रकार होते हैं–जटापाठ, मालापाठ, शिखापाठ, रेखापाठ, ध्वजपाठ, दंडपाठ, रथपाठ और घनपाठ।

♦चारों वेदों में कुल ७६,८०० शब्द हैं।

♦वेद की विशेषता बताते हुए महाभारत में कहा गया है कि–

अनादि निधिना नित्या वागुत्सुष्टा स्वयं भुवाः।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः।।
(महाभारत शान्ति पर्व २३२/५४)

सृष्टि के आदि में स्वयंभू परमात्मा ने वेद रूपी ऐसी दिव्य वाणी प्रकट की है जो नित्य है तथा जिससे संसार की सारी सुप्रवृतियाँ चलती हैं।

धर्म-अधर्म

श्री कृष्ण पूरे महाभारत के ऐसे पात्र हैं जो परिणाम में विश्वास करते हैं प्रक्रिया में नहीं, सत्य तक पहुँचने की किसी भी बाधा का निराकरण करने में वे समर्थ हैं। गीता से बाहर जाकर भी एक प्रसंग का उल्लेख कर दिया जाये तो अनुचित नहीं होगा। जब कर्ण के रथ का पहिया भूमि में धंस जाता है तो कर्ण अर्जुन को कहता है कि युद्ध के, धर्म के नियम से निःशस्त्र पर प्रहार करना अधर्म होगा। श्री कृष्ण जो उत्तर देते हैं उसे यदि हम स्मरण कर लेंगे तो जीवन में हमें कभी कोई मूर्ख नहीं बना सकता। वह उत्तर था कर्ण धर्म तो उनके साथ किया जाता है जो स्वयं धार्मिक हैं, तुमने कल ही अभिमन्यु की हत्या अधर्म से की है, युद्ध का धर्म है एक व्यक्ति के साथ एक ही व्यक्ति युद्ध कर सकता है परन्तु तुम सात लोगों ने मिलकर एक अभिमन्यु को मारा, ऐसे तुम हमें धर्म का पाठ पढ़ाते हो। कृष्ण ने कहा–अर्जुन कर्ण पर धनुष चलाने में कोई अधर्म नहीं है इसको तुम बिना संकोच मार डालो। सारी गीता में मनुष्य को अपने कर्त्तव्य में आने वाली बाधाओं को किस प्रकार दूर करना है यही बताया है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

1

श्रीमती नीलां आर्या एवं श्री वीरी सिंह द्वारा अपने घर मकेहड़ में आयोजित वार्षिक उत्सव में उपस्थित विद्वान् एवं भजनोपदेशक

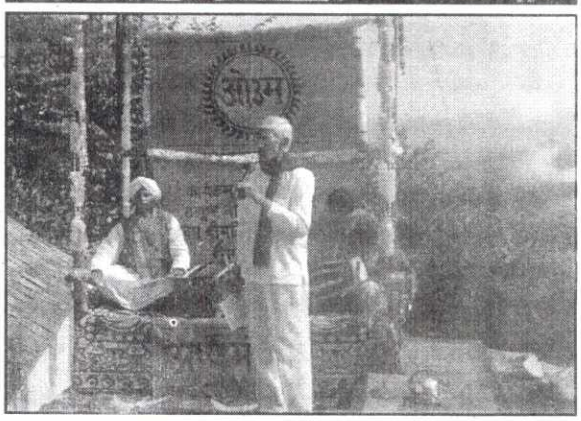

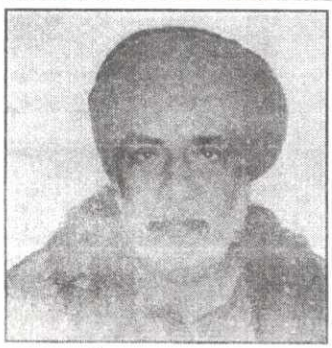

स्वामी सदानद, संचालक
दयानन्द मठ, दीनानगर